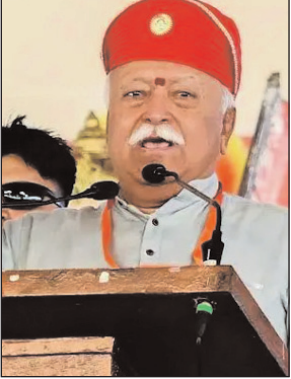




राममंदिर चंदा विवाद

हिंदू आस्था हुई आहत: भागवत

■ संघ प्रमुख बोले- होसबोले की हर बात से हम सहमत



नागपुर। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रमुख मोहन भागवत ने राम मंदिर चंदे के विवाद पर अपनी प्रतिक्रिया दी। उन्होंने कहा कि वह इस पूरे मामले पर संघ के महासचिव दत्तात्रेय होसबाले की बात से पूरी तरह सहमत हैं। नागपुर में पत्रकारों से बातचीत के दौरान जब भागवत से चंदा चोरी के आरोपों पर सवाल पूछा गया, तो उन्होंने कहा, होसबाले जी का बयान देखिए मेरी भी वही प्रतिक्रिया है। इससे पहले शुक्रवार को आरएसएस के महासचिव दत्तात्रेय होसबाले ने इस मामले पर एक बयान जारी किया था। उन्होंने कहा था कि अयोध्या के राम मंदिर में चंदे की हेराफेरी के आरोपों ने पूरे समाज की भावनाओं और आस्था को गहरी ठेस पहुंचाई है।

होसबाले ने सरकार और जांच एजेंसियों से मांग की थी कि इस मामले की पूरी जांच की जाए और जो भी व्यक्ति दोषी पाया जाए, उसे सख्त से सख्त सजा दी जानी चाहिए। होसबाले ने अपने बयान में इस बात पर भी जोर दिया था कि कुछ हिंदू विरोधी और देश-विरोधी ताकतों इस दुर्भाग्यपूर्ण घटना का फायदा उठाने की कोशिश कर रही हैं। वे इस बहाने हिंदू धर्म को बदनाम करना चाहती हैं। उन्होंने हिंदू समाज से अपील की कि इस

मुश्किल समय में वे सब्र और संयम बनाए रखें और ऐसी किसी भी साजिश को कामयाब न होने दें।

पूरी तरह डर गयी है विहिप : सौरभ भारद्वाज

राम जन्मभूमि चंदा चोरी के आरोपों को लेकर विश्व हिंदू परिषद के अंतरराष्ट्रीय अध्यक्ष आलोक कुमार द्वारा पुलिस को लिखे गए पत्र पर अब आम आदमी पार्टी ने तीखा पलटवार किया है। आप के दिल्ली प्रदेश अध्यक्ष सौरभ भारद्वाज ने इस मामले पर बयान जारी करते हुए विहिप पर गंभीर सवाल उठाए हैं। सौरभ भारद्वाज ने कहा कि विहिप अध्यक्ष के इस कदम से यह साफ हो गया है कि संगठन इस बात से बहुत परेशान है कि देश भर में चंदा चोरी का मुद्दा उठाना जा रहा है। उन्होंने आरोप लगाया कि विहिप के इरादे साफ नहीं हैं। अगर उनके इरादे साफ होते, तो वे खुद कहते कि उनकी संस्था के भीतर ही ऐसे कई लोग हैं जो इस मामले में सामने आकर गवाही देना चाहते हैं, क्योंकि इस ट्रस्ट में उनके ही संगठन से जुड़े लोग शामिल थे।

मुख्यमंत्री ने डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी की 125वीं जयंती पर किया नमन

अखंड भारत के संकल्प का अद्वितीय उदाहरण: साय

रायपुर। मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी की 125वीं जयंती के अवसर पर पंडित रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय में आयोजित प्रदेश स्तरीय समारोह में उन्हें श्रद्धापूर्वक नमन करते हुए कहा कि डॉ. मुखर्जी का जीवन राष्ट्रभक्ति, शिक्षा, त्याग और अखंड भारत के संकल्प का अद्वितीय उदाहरण है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में देश आज डॉ. मुखर्जी के सपनों को साकार करने की दिशा में निरंतर आगे बढ़ रहा है। धारा 370 का हटाना, अंत्योदय की भावना पर आधारित विकास तथा राष्ट्रीय एकता को सुदृढ़ करने वाले अनेक निर्णय उनके विचारों की मूर्त रूप देने वाले ऐतिहासिक कदम हैं।

मुख्यमंत्री साय ने कहा कि डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी की स्मृति को चिरस्थायी बनाने के लिए राज्य के सभी संभागीय एवं जिला मुख्यालयों में उनकी प्रतिमाएं स्थापित की जाएंगी। इसके लिए 10 करोड़ रुपये की राशि स्वीकृत की गई है।

मुखर्जी ने कहा कि डॉ. मुखर्जी केवल एक दूरदर्शी राजनेता ही नहीं, बल्कि विलक्षण शिक्षाविद भी थे। मात्र 33 वर्ष की आयु में विश्वविद्यालय के कुलपति बनने का गौरव प्राप्त करने वाले डॉ. मुखर्जी ने स्वतंत्र भारत के



प्रथम उद्योग मंत्री के रूप में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया। राष्ट्रहित सर्वोपरि रखने की उनकी प्रतिबद्धता ऐसी थी कि उन्होंने सिद्धांतों से समझौता करने के बजाय मंत्रिमंडल से इस्तीफा देना स्वीकार किया। उन्होंने कहा कि जम्मू-

कश्मीर में एक देश में दो निशान, दो विधान और दो प्रधान की व्यवस्था के विरुद्ध डॉ. मुखर्जी ने ऐतिहासिक संघर्ष किया और राष्ट्र की एकता एवं अखंडता के लिए अपना सर्वोच्च बलिदान दिया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने देश के गौरवशाली इतिहास और भूले-बिसरे स्वतंत्रता सेनानियों को उचित सम्मान दिलाने का कार्य किया है। हर घर तिरंगा जैसे जनआंदोलन ने राष्ट्रभक्ति की भावना को नई ऊर्जा दी है। उन्होंने बताया कि राज्य सरकार ने भी नया रायपुर स्थित शहीद वीरनारायण सिंह स्मारक सह

जनजातीय स्वतंत्रता संग्राम सेनानी संग्रहालय में छत्तीसगढ़ के 14 वीर स्वतंत्रता सेनानियों की स्मृति में विशेष दीर्घा स्थापित की है। राज्य सरकार पंडित दीनदयाल उपाध्याय और डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के अंत्योदय के विचारों को आधार बनाकर कार्य कर रही है। पिछले ढाई वर्षों में मोदी की गारंटी के अधिकांश संकल्प पूरे किए गए हैं। नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में नियद नेछानार योजना के माध्यम से सड़क, बिजली, पेयजल, स्वास्थ्य, शिक्षा और संचार जैसी मूलभूत सुविधाएं तेजी से पहुंचाई जा रही हैं। 500 से अधिक गांवों तक आधारभूत सुविधाओं का विस्तार हुआ है।

चंपत राय और अनिल मिश्रा का इस्तीफा मंजूर, कृष्ण मोहन कार्यवाहक महासचिव नियुक्त



अयोध्या। राम मंदिर में चढ़ावे की चोरी और वित्तीय अनियमितताओं के आरोपों के बाद श्री राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट की हुई पहली महत्वपूर्ण बैठक में बड़े फैसले हुए हैं। ट्रस्ट ने महासचिव चंपत राय और ट्रस्टी अनिल मिश्रा के इस्तीफे स्वीकार किए हैं। बैठक में तय हुआ कि सेवानिवृत्त आईएफएस अधिकारी कृष्ण मोहन को चंपत राय की अनुपस्थिति में कार्यवाहक महासचिव का पदभार सौंपा जाएगा। ट्रस्ट ने चढ़ावा चोरी की घटना पर गहरी शर्मिंदगी और दुःख व्यक्त किया है। राम मंदिर ट्रस्ट के कोषाध्यक्ष गोविंद देव गिरी ने बैठक के बाद बताया कि चंपत राय ने अपनी नैतिक जिम्मेदारी स्वीकार कर कहा कि जब तक चढ़ावा चोरी के अपराधी पकड़े नहीं जाते, तब तक उनका पद पर बने रहना उचित नहीं है। गोविंद देव गिरी ने इस चोरी को लज्जाजनक घटना कारा देकर कहा कि ट्रस्ट के सभी सदस्य इससे आहत हैं। उन्होंने बताया कि ट्रस्टी के. पाराशरन ने स्पष्ट किया था कि ट्रस्ट के संविधान में त्यागपत्र मिलते ही उस स्वीकार करने का प्रावधान है, जिसके चलते इस्तीफों को तुरंत मंजूरी दी गई। सोमवार

सहकारिता से समृद्धि: रायपुर में सहकारी सप्ताह का भव्य समापन

रायपुर। भारत सरकार द्वारा गठित सहकारिता मंत्रालय की स्थापना के सफल 5 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में आयोजित सहकारी सप्ताह का भव्य समापन जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक रायपुर के प्रांगण में हुआ। इस विशेष अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में छत्तीसगढ़ के सहकारिता एवं वन मंत्री श्री केदार कश्यप उपस्थित रहे। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि और विशिष्ट अतिथियों द्वारा बैंक के संस्थापक पं. वामन बलीराम लाखे के तैलचित्र पर माल्यार्पण और दीप प्रज्वलन कर समारोह की शुरुआत की गई। इसके साथ ही बैंक परिसर में छत्तीसगढ़ महतारी की प्रतिमा का गरिमामय अनावरण भी किया गया। समारोह के दौरान देश के गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह के भाषण का यूट्यूब चैनल के माध्यम से सीधा प्रसारण किया गया। अपने संबोधन में श्री शाह ने सहकारिता के क्षेत्र में क्रांतिकारी बदलावों का जिक्र किया।

जमीन से आसमान तक यातायात ढप, 17 उड़ानें ढप

मुंबई। देश की आर्थिक राजधानी मुंबई इस समय कुदरत के कहर झेल रहा है। आसमान से लगातार बरस रही मूसलाधार बारिश ने मायानगरी की रफ्तार पर पूरी तरह ब्रेक लगा दिया है। इतना ही नहीं इस तेज बारिश के चलते पूरा शहर जलमग्न हो चुका है, जिससे आम जनजीवन पूरी तरह अस्त-व्यस्त है। हालांकि यह संकट केवल सड़कों तक सीमित नहीं है, जमीन पर जहां रेल और गाड़ियों के पहिए थम गए हैं, वहीं आसमान में भी विमान सेवाएं पूरी तरह

चरमरा गई हैं। रनवे पर पानी भरने और खराब विजिबिलिटी के कारण सैकड़ों उड़ानें प्रभावित हैं। हालात को देखते हुए इंडिगो और आकासा एयरलाइंस समेत कई बड़ी विमान कंपनियों ने यात्रियों के लिए जरूरी एडवाइजरी भी जारी की है।मौसम के इस खराब मिजाज के कारण मुंबई के छत्रपति शिवाजी महाराज इंटरनेशनल एयरपोर्ट पर आज सुबह 11:30 बजे तक कम से कम 17



उड़ानें रद्द करनी पड़ीं, जबकि 200 से ज्यादा उड़ानों में देरी हुई। मौसम विभाग ने मुंबई और पुणे समेत आस-पास के इलाकों के लिए हार्इ अलर्ट जारी किया है।बता दें कि भारी बारिश और उड़ानों पर ब्रेक लग गया है। रनवे के आस-पास पानी भरने, तेज हवाएं चलने और विजिबिलिटी अचानक कम होने से विमानों को उतारने और उड़ाने में भारी

दिक्रत आ रही है।एयरपोर्ट के टर्मिनलों पर यात्रियों की भारी भीड़ जमा है और लोग परेशान हो रहे हैं। हालांकि, उनकी मदद के लिए ग्राउंड स्टाफ और कस्टमर सर्विस डेस्क पूरी तरह तैनात हैं ताकि यात्रियों को दूसरे रूट की टिकट या ठहरने की व्यवस्था दी जा सके।दूसरी ओर देश की सबसे बड़ी एयरलाइन इंडिगो ने सोशल मीडिया पर यात्रियों को सावधान करते हुए कहा कि भारी बारिश के कारण मुंबई और पुणे आने-जाने वाली उड़ानें प्रभावित हुई हैं।



जम्मू-कश्मीर के दो दिवसीय दौरे पर भाजपा अध्यक्ष नितिन

नईदिल्ली। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के राष्ट्रीय अध्यक्ष नितिन नवीन सोमवार (6 जुलाई) से जम्मू-कश्मीर के दो दिवसीय संगठनात्मक दौरे पर रहेंगे। केंद्र शासित प्रदेश में पार्टी के नेटवर्क को मजबूत करने और आगामी रणनीतियों को धार देने के लिहाज से इस दौरे को बेहद महत्वपूर्ण माना जा रहा है। अपने इस प्रवास के दौरान भाजपा अध्यक्ष वरिष्ठ नेताओं, नवनिर्वाचित जनप्रतिनिधियों और जमीनी स्तर के पदाधिकारियों के साथ कई अहम बैठकें करेंगे। इसके साथ ही वह जनसंघ के संस्थापक डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी की 125वीं जयंती के कार्यक्रमों में भी शिरकत करेंगे।

भाजपा के मुताबिक, यह दौरा केंद्र शासित प्रदेश में पार्टी के संगठनात्मक नेटवर्क को मजबूत करने पर केंद्रित रहेगा। नवीन जनसंघ के संस्थापक डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी की 125वीं जयंती के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रमों में भी भाग लेंगे। पार्टी ने एक बयान में कहा, “भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष छह जुलाई से जम्मू-कश्मीर के दो दिवसीय संगठनात्मक दौरे पर रहेंगे।”



केजरीवाल के सवाल पर सीएम रेखा गुप्ता का करारा जवाब

नईदिल्ली। दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल पर तीखा हमला बोला है। केजरीवाल द्वारा भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष नितिन नवीन को लेकर किए गए आप कौन हैं? वाले पोस्टर पर प्रतिक्रिया देते हुए रेखा गुप्ता ने कहा कि कभी पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने भी पूछा था, कौन अमित शाह? समय हर प्रश्न का उत्तर देता है। अहंकार तो रावण का भी नहीं टिका, आप कौन? दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने एक्स पर पलटवार करते हुए लिखा, नितिन नवीन विश्व के सबसे बड़े राजनीतिक दल भाजपा के सबसे कम उम्र में नेतृत्व संभालने वाले राष्ट्रीय अध्यक्ष हैं। उन्हें बिहार की बांकीपुर विधानसभा क्षेत्र का लगातार चार बार प्रतिनिधित्व करने का गौरव प्राप्त है। भारतीय जनता युवा मोर्चा के कार्यकर्ता के रूप में संघर्ष करते हुए उन्होंने पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष तक का सफर तय किया है। वर्तमान में वह विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र की संसद के उच्च सदन के सदस्य निर्वाचित हुए हैं।



बंगाल की 3 राज्यसभा सीटों पर उपचुनाव का ऐलान

नईदिल्ली। चुनाव आयोग ने सोमवार (6 जुलाई) को पश्चिम बंगाल की तीन राज्यसभा सीटों के लिए उपचुनाव की घोषणा की। इन सीटों पर वोटिंग और वोटों की गिनती 24 जुलाई को होगी। तुणमूल कांग्रेस के बागी सांसदों- सुखेंद्र शेखर राय, सुष्मिता देव और प्रकाश चिक बारिक- के उच्च सदन से इस्तीफा देने के कारण ये उपचुनाव कराने पड़ रहे हैं। विधानसभा चुनावों में हार के बाद पार्टी लीडरशिप पर सवाल उठाने के बाद, इन तीनों ने जून में अलग-अलग तारीखों पर इस्तीफा दिया था। पश्चिम बंगाल विधानसभा चुनावों में बीजेपी की ज़बरदस्त जीत के बाद, इन तीन उपचुनावों के बाद राज्यसभा में उनकी संख्या बढ़ने वाली है। अधिसूचना जारी होने की तिथि- 7 जुलाई, 2026 । नामांकन पत्र दाखिल करने की अंतिम तिथि- 14 जुलाई, 2026 । नामांकन पत्रों की जांच (स्क्रूटनी)- 15 जुलाई, 2026 को होगी। नाम वापस लेने की अंतिम तिथि- 17 जुलाई, 2026 मतदान की तिथि- 24 जुलाई, 2026 (शुक्रवार)मतदान का समय- प्रातः 9:00 बजे से शाम 4: बजे तक मतगणना- 24 जुलाई, 2026 (शाम 5:00 बजे से चुनाव प्रक्रिया पूर्ण होने की अंतिम तिथि- 27 जुलाई, 2026 (सोमवार)

टीवीके मंत्री पर गवाहों को धमकाने का आरोप

नईदिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने सोमवार को करूर भागदड़ मामले में गवाहों को प्रभावित करने की कोशिशों के आरोपों वाली याचिका पर तुरंत सुनवाई करने पर सहमति जताई। इस मामले में 2025 में एक राजनीतिक रैली के दौरान 41 लोगों की मौत हो गई थी। जस्टिस अहसानुद्दीन अमानुल्लाह और जस्टिस शील नागू की बेंच मंगलवार को इस मामले पर सुनवाई करेगी। सीनियर एडवोकेट हुजेफा अहमदी ने मामले की गंभीरता और जल्द सुनवाई की ज़रूरत बताते हुए कहा कि भले ही सेंट्रल ब्यूरो ऑफ इन्वेस्टिगेशन की जांच चल रही है, लेकिन आरोपी—जो अब तमिलनाडु सरकार में मंत्री हैं गवाहों को प्रभावित करने की कोशिश कर रहे हैं। सुप्रीम कोर्ट ने इन चिंताओं को उठाने वाली याचिका को तत्काल सुनवाई के लिए सूचीबद्ध करने पर सहमति दे दी है। यह मामला 27 सितंबर, 2025 को करूर में तमिलनाा वेट्री कल्लमन द्वारा आयोजित जन-संपर्क कार्यक्रम के दौरान मची भागदड़ से जुड़ा है। कार्यक्रम में अचानक भीड़ बढ़ने से जानलेवा भगदड़ मच गई।



शाहजहांपुर की जलालाबाद तहसील अब कहलाएगी परशुरामपुरी

लखनऊ। यूपी में एक और शहर का नाम बदला ! लखनऊ में मुख्यमंत्री आवास पर हुई कैबिनेट बैठक में शाहजहांपुर की जलालाबाद तहसील का नाम बदलने के प्रस्ताव को पास कर दिया गया है। योगी कैबिनेट की मंजूरी के बाद अब जलालाबाद तहसील का नया नाम भगवान परशुराम पुरी होगा। सोमवार को हुई इस उच्चस्तरीय बैठक में दोनों डिप्टी सीएम और राज्य के प्रमुख मंत्रियों ने हिस्सा लिया, जहाँ इस फैसले समेत कई अन्य महत्वपूर्ण योजनाओं और प्रस्तावों को भी मंजूरी दी गई। प्रशासन जल्द ही नाम बदलने की आगे की कागजी कार्रवाई शुरू करेगा। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने भारतीय जनसंघ के संस्थापक डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी की 125वीं जयंती पर सोमवार को उन्हें पुष्पांजलि अर्पित की और उन्हें महान स्वतंत्रता सेनानी, शिक्षाविद् तथा भारत की एकता और अखंडता के प्रबल समर्थक के रूप में याद किया। आदित्यनाथ ने यहां आयोजित एक कार्यक्रम में कहा कि देश की एकता की रक्षा करने और जम्मू-कश्मीर को मिले विशेष दर्जे का विरोध करने में डॉ. मुखर्जी के योगदान को हमेशा याद रखा जाएगा।



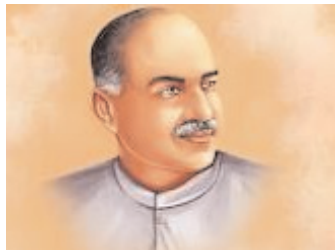
डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी की चिरस्थाई विरासत: संस्थाएं, विचार और राष्ट्र

गजेंद्र सिंह शेखावत

इतिहास अक्सर महान नेताओं को उनके राजनीतिक संघर्षों के जरिए याद करता है। लेकिन राजनेताओं के चिरस्मरणीय योगदान राजनीति के दायरे तक ही सीमित नहीं होते। उनकी वास्तविक विरासत उनके द्वारा सृजित संस्थाओं, परिपोषित विचारों और आने वाली पीढ़ियों के लिए छोड़े गए आदर्शों में होती है। राष्ट्र भारत केसेरी डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी का 125वां जन्म दिवस मना रहा है। इस अवसर पर उनके सार्वजनिक जीवन के एक ऐसे पहलू को स्मरण करना प्रासंगिक होगा जिसकी ओर व्यापक रूप से गौर करने की जरूरत है। यह पहलू है, राष्ट्र निर्माण की बुनियाद के रूप में संस्थाओं का सृजन करने की उनकी आजीवन

प्रतिबद्धता। स्वतंत्र भारत का उदय सिर्फ एक राजनीतिक संघर्ष से नहीं हुआ। उसे विश्वविद्यालय बनाने थे जो नागरिकों को शिक्षित करने में सक्षम हों। ऐसी अनुसंधान संस्थाएं खड़ी करनी थीं जो वैज्ञानिक ज्ञान का प्रसार कर सकें। उसे ऐसे उद्योग तैयार करने थे जो आर्थिक आत्मनिर्भरता पैदा कर सकें। सभ्यता की विरासत की रक्षा करने वाले सांस्कृतिक संगठनों और लोकतांत्रिक मूल्यों को मजबूती देने वाली लोक संस्थाओं को तैयार करना था। डॉ मुखर्जी ने जल्दी ही समझ लिया था कि राष्ट्र का भविष्य सिर्फ दूरदर्श नेतृत्व पर ही निर्भर नहीं करता। यह उन मजबूत संस्थाओं पर भी निर्भर करता है जो नेताओं और सरकारों से ज्यादा टिकाऊ होंगी। उनकी असाधारण शैक्षिक कैरियर उनके विश्वास को प्रतिबिंबित

करता है। वह कलकत्ता विश्वविद्यालय के सबसे कम उम्र के कुलपति बने। उन्होंने वैसे समय में यह कार्यभार संभाला जब उच्चतर शिक्षा भारत के बौद्धिक जागरण का केंद्र बन रही थी। उनके लिए विश्वविद्यालय सिर्फ स्नातक तैयार करने के स्थल नहीं थे। वे वैसे सुविज्ञ नागरिकों को गढ़ने वाले संस्थान थे जो सार्वजनिक जीवन में जिम्मेदारी के साथ योगदान करने में सक्षम हों। उनकी राय थी कि शिक्षा को राष्ट्र निर्माण के वृहत्तर कार्य से अलग नहीं किया जा सकता। विज्ञान और प्रौद्योगिकी प्रगति के प्रति उनका समर्पण विश्वविद्यालयों के परिसर से कहीं आगे बढ़कर था। भारतीय विज्ञान संस्थान, बेंगलुरु की कोर्ट और कार्डिसल के सदस्य के तौर पर, उन्होंने भारत के प्रमुख वैज्ञानिक अनुसंधान केंद्रों में से एक को मजबूत



बनाने में योगदान दिया। 1947 में, उन्होंने डिपार्टमेंट ऑफ पावर इंजीनियरिंग; की आधारशिला रखी क्योंकि वे भली-भांति समझते थे कि स्वतंत्र भारत की आर्थिक प्रगति के लिए इंजीनियरिंग की शिक्षा और प्रौद्योगिकी क्षमता बहुत जरूरी होगी। नवाचार को मुख्य नीतिगत लक्ष्य बनाए जाने से बहुत पहले ही, उन्होंने यह समझ लिया था कि वैज्ञानिक उत्कृष्टता और औद्योगिक

विकास ही देश की दीर्घकालिक मजबूती तय करेंगे। स्वतंत्रता के बाद, जब डॉ. मुखर्जी भारत के पहले उद्योग और आपूर्ति मंत्री बने, तब इस दृष्टिकोण को व्यावहारिक रूप दिया गया। उन शुरुआती सालों में, नए नए आज़ाद देश के सामने एक औद्योगिक आधार तैयार करने की बड़ी चुनौती थी। चित्ररंजन लोकोमोटिव वर्क्स और सिंदरी फर्टिलाइजर फैक्ट्री जैसे संस्थान सिर्फ मैनुफैक्चरिंग इकाइयों के तौर पर नहीं, बल्कि तकनीकी क्षमता और आर्थिक आत्मनिर्भरता हासिल करने के भारत के संकल्प के प्रतीक के तौर पर स्थापित किए गए थे। डॉ. मुखर्जी के लिए औद्योगीकरण कभी भी अपने आप में मुख्य नीतिगत लक्ष्य नहीं था; यह राष्ट्रीय क्षमता और सामूहिक आत्मविश्वास में किया गया एक निवेश था। हालाँकि,

किसी भी संस्थान के निर्माण के लिए केवल भौतिक अवसंरचना या प्रशासनिक कुशलता की ही ज़रूरत नहीं होती। इसके लिए सहानुभूति, जन-सेवा और नैतिक जिम्मेदारी की भावना की भी आवश्यकता होती है। डॉ. मुखर्जी में इन गुणों की झलक 1943 के बंगाल अकाल के दौरान ही साफ तौर पर दिखाई दी थी, जब उन्होंने बीसवीं सदी की सबसे बड़ी मानवीय त्रासदी से प्रभावित लोगों के लिए बड़े पैमाने पर राहत कार्य करने में खुद को समर्पित कर दिया था। विभाजन के बाद, उन्होंने विस्थापित लोगों के पुनर्वास के लिए बड़े पैमाने पर काम किया। वे समझते थे कि राष्ट्र के पुनर्निर्माण में संस्थानों को फिर से खड़ा करने के साथ-साथ लोगों के दुःख दर्द को कम करना और उस पर मरहम लगाना भी उतना ही महत्वपूर्ण

है। उनका सार्वजनिक जीवन, भारत की सांस्कृतिक विरासत के प्रति गहरी समझ और सम्मान को भी दर्शाता था। महाबोधि सोसाइटी ऑफ इंडिया ; के अध्यक्ष के तौर पर, उन्होंने बौद्ध देशों के साथ भारत के सांस्कृतिक और आध्यात्मिक संबंधों को मजबूत करने में अहम भूमिका निभाई। सभ्यतागत कूटनीति के स्थायी महत्व को समझते हुए, बुद्ध के मुख्य शिष्यों-अर्हत सारिपुत्र और अर्हत मौद्गल्यायन-के पवित्र अवशेषों का भारत में स्वागत करने में उन्होंने सक्रिय रूप से हिस्सा लिया। आज भी, मंगोलिया जैसे देशों के साथ इन पवित्र अवशेषों को साझा करने की भारत की कोशिशें यह दिखाती हैं कि किस तरह सांस्कृतिक विरासत अंतरराष्ट्रीय सद्भावना को मजबूत करती है।

पहली ही बारिश में ग्राम बरगा पर बनी 26 करोड़ की ओवरब्रिज में आई दरार

राजनांदगांव। छत्तीसगढ़ के राजनांदगांव जिले के ग्राम बरगा के समीप दक्षिण पूर्व रेलवे द्वारा करीब 26 करोड़ रुपये की लागत से निर्मित ओवरब्रिज पहली ही बारिश में दरकने लगा है। इस ब्रिज का उद्घाटन जून में ही हुआ है। उद्घाटन के महज कुछ सप्ताह बाद ही पुल में बड़ी दरारें दिखाई देने से निर्माण गुणवत्ता पर गंभीर सवाल खड़े हो गए हैं। स्थानीय लोगों का कहना है कि ओवरब्रिज बीच से दो हिस्सों में बंटता नजर आ रहा है, जिससे हादसे की आशंका बढ़ गई है।

यह ओवरब्रिज क्षेत्र के सैकड़ों ग्रामीणों के लिए आवागमन का प्रमुख मार्ग है। ऐसे में पुल में आई दरारों ने लोगों की चिंता बढ़ा दी है। ग्रामीणों ने पुल की तत्काल तकनीकी जांच कर दोषी एजेंसी के खिलाफ कार्रवाई और मरम्मत की मांग की है। स्थानीय लोगों का आरोप है कि करोड़ों रुपये खर्च होने के बावजूद निर्माण कार्य की गुणवत्ता मानकों के अनुरूप नहीं रही। पहली ही बारिश में पुल की



निर्माण कार्य की गुणवत्ता पर उठे सवाल

स्थिति बिगड़ने से सरकारी निर्माण कार्यों की गुणवत्ता पर सवाल उठ रहे हैं।

आलीवारा रेलवे ओवरब्रिज की स्थिति भी ठीक नहीं

सूत्रों के अनुसार आलीवारा रेलवे ओवरब्रिज की स्थिति भी ठीक नहीं है। कुछ स्थानों पर सड़क के नीचे गड्ढे बनने लगे हैं और किनारों का हिस्सा बैठ गया है। ग्रामीणों का आरोप है कि पहली बरसात में ही यह स्थिति है तो आने वाले समय में क्या होगा? आक्रोशित लोगों ने निर्माण एजेंसी के साथ संबंधित अधिकारियों की जवाबदेही तय

करने और पूरे निर्माण कार्य की तकनीकी जांच कराने की मांग की है। रेलवे और निर्माण एजेंसी की ओर से प्रभावित हिस्सों पर मरम्मत का काम जारी है।

दरार के कारणों की जांच कराएंगे रेलवे इंजीनियर
इस मामले में रेलवे इंजीनियर का कहना है कि दरार के कारणों की तकनीकी जांच कराई जाएगी। खतरों की कोई बात नहीं है। पहली बारिश में थोड़ा बहुत सेटलमेंट होता है वो माइनर ही है। फिर भी टेक्निकल टीम और उच्च अधिकारी मामले की जांच करेंगे।

डोंगरगांव में बारिश के बाद खेत में भूधंसाव, गड्ढे में तब्दील जमीन

राजनांदगांव। डोंगरगांव ब्लॉक अंतर्गत आने वाले कबीर मठ नदिया गांव में इन दिनों विशाल के गड्ढा चर्चा का विषय बना हुआ है। गांव के किसान अमर सिंह रावटे के खेत में तेज बारिश के बाद रविवार दोपहर बाद अचानक जमीन धंसने की घटना से ग्रामीणों में दहशत फैल गई।

प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार शुरुआत में जमीन पर छोटा गड्ढा दिखाई दिया, जो कुछ ही देर में लगातार धंसते हुए काफी बड़ा हो गया। घटना की सूचना मिलते ही बड़ी संख्या में ग्रामीण मौके पर पहुंच गए।

सूचना मिलने पर पुलिस और राजस्व विभाग की टीम तत्काल घटनास्थल पहुंची। सुरक्षा के मद्देनजर पूरे क्षेत्र की घेराबंदी कर लोगों की आवाजाही रोक दी गई है। मौके पर नायब तहसीलदार जगदेव प्रसाद खूटे, थाना प्रभारी आशीर्वाद रहटगांवकर, पटवारी, राजस्व निरीक्षक और पुलिस बल



पहुंचा।

प्रत्यक्षदर्शियों का कहना है कि तेज बारिश के बाद जमीन के भीतर लगातार धंसाव होता रहा, जिससे गड्ढे का आकार तेजी से बढ़ता गया। बता दें कि पिछले 3 दिनों से डोंगरगढ़ से लेकर डोंगरगांव में बारिश जारी है। आज भी सुबह से रुक रुककर बारिश हो रही है।

प्रशासन ने लोगों से अपील की है कि वे घटनास्थल के आसपास न जाएं और सुरक्षा निर्देशों का पालन करें। अधिकारियों के अनुसार भूमि धंसाव के कारणों की जांच कराई जा रही है। जांच रिपोर्ट के बाद ही स्पष्ट हो सकेगा कि यह घटना किस वजह से हुई।

पेंझा रतनपुर मेन रोड पर आधी रात से लंबा जाम

जीपीएम में बारिश के बीच ट्रेलर ब्रेकडाउन हो गया. मौके पर मौजूद ड्राइवरों का कहना है कि दोनों तरफ लगभग 500 गाड़ियां फंसी हुई हैं.

गौरेला पेंझा मरवाही। जोड़ा तालाब गांव के पास पेंझा रतनपुर मुख्य मार्ग पर एक ट्रेलर के बीच सड़क पर ब्रेकडाउन हो जाने से कई किलोमीटर लंबा जाम लग गया। ट्रेलर पेंझा से बिलासपुर की ओर जा रहा था। बीच सड़क पर गाड़ी के खड़े हो जाने से दोनों ओर वाहनों की लंबी कतार लग गई और यातायात पूरी तरह प्रभावित हो गया।

लगातार हो रही बारिश के कारण सड़क पर आवागमन पहले से ही प्रभावित था। ऐसे में ट्रेलर के खराब हो जाने से स्थिति और गंभीर हो गई है। ज्ञानकारी के अनुसार ट्रेलर के इंजन में डीजल स्प्लॉई बंद होने से कोयले से



लोड जा रहा ट्रेलर बीच सड़क पर ही बंद हो गया। जिसके चलते ट्रक, बस, मालवाहक, चारपहिया वाहन काफी समय से फंसे रहे। बारिश के बीच वाहन चालकों और यात्रियों को भारी परेशानी का सामना करना पड़ा।

घटना की सूचना मिलते ही जीपीएम यातायात पुलिस मौके पर पहुंची और जाम खुलवाने के प्रयास शुरू किए। पुलिस ने दोनों ओर से वाहनों की आवाजाही को नियंत्रित करते हुए ट्रेलर को सड़क से हटाने की व्यवस्था शुरू कर दी है।यातायात प्रभारी का

गरीबी के कारण कोई बच्चा शिक्षा से न हो वंचित, पे बैंक टू सोसाइटी कर रही मदद

जांजगीर चांपा। जिले के अधिकारी कर्मचारियों ने गरीब छात्र छात्राओं को उच्च शिक्षा और कोचिंग कराने के लिए खास पहल की है। डॉ अम्बेडकर एजुकेशन पे बैंक टू सोसायटी नाम से एक संस्था बना कर आर्थिक रूप से गरीब प्रतिभावान बच्चों को मदद दी जा रही है। इस संस्था में अब तक 40 अधिकारी कर्मचारी और समाज सेवी शामिल है। संस्था के सदस्यों ने 10वीं और 12वीं बोर्ड परीक्षा में प्रवीण्य सूची में दर्ज छात्र छात्राओं को सम्मानित किया। जिले के आडिटोरियम में विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें कोरिया के एंड्रशनाल कलेक्टर एसपी वैद्य, रिटायर्ड आईएएस दिलीप वासनिकर के साथ कई अधिकारी कर्मचारी शामिल हुए।

बता दें चार साल पहले एसपी वैद्य की अध्यक्षता में पे बैंक टू सोसायटी नाम से संस्था की



स्थापना की गई।इसके तहत अब तक जिले के 12 से ज्यादा बच्चों का कॉलेज में एडमिशन कराया गया, उन्हें हॉस्टल उपलब्ध कराया और उनके शिक्षा में आने वाले खर्च का वहन किया जा रहा है। सोसायटी में 40 से ज्यादा सदस्य है। हमारा प्रयास है कि ज्यादा से ज्यादा प्रतिभावान बच्चों को सम्मानित करें और उन्हें आर्थिक मदद दे। वर्तमान में 164 बच्चों का पंजीयन हो पाया है। छात्र छात्राएं जिस भी क्षेत्र में अपना भविष्य बनाना चाह रहा है उसे सोसयटी की तरफ से शिक्षा में पूरी मदद की जा रही है। आर्थिक रूप से कमजोर बच्चों

की मदद की जाती है -डॉ एम एम ओग्गे, फाउंडर मंबर, पे बैंक टू सोसायटी जांजगीर डॉ अम्बेडकर एजुकेशन सोसायटी में बिलासपुर रायपुर और अन्य जिलों के भी समाजसेवी और अधिकारी कर्मचारी जुड़ने लगे है। बिलासपुर से आए समाज सेवी सारांग राव होमने ने बताया कि उन्होंने बिलासपुर में बच्चों के लिए हॉस्टल शुरू किया है, जहां गरीब छात्र छात्राओं के रहने खाने के साथ कोचिंग की व्यवस्था की गई है। इससे गरीब बच्चों को उच्च शिक्षा पाने में काफी मदद मिल रही है।

छत्तीसगढ़

प्रमुख समाचार

बहु निकली ससुर की कातिल, 24 घंटे में सुलझी अंधे कत्ल की गुत्थी

जशपुर। दुलदुला थाना क्षेत्र के ग्राम बोड़ाछपर में 70 वर्षीय बुजुर्ग की हत्या के सनसनीखेज मामले का जशपुर पुलिस ने महज 24 घंटे के भीतर खुलासा कर दिया है। पुलिस ने वैज्ञानिक जांच, तकनीकी साक्ष्यों और त्वरित कार्रवाई के आधार पर मृतक की बहु सहित चार आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया है। जांच में सामने आया कि पारिवारिक विवाद के कारण बहु ने हत्या की साजिश रची थी। डीआईजी व वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक के निर्देशन, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक व एसडीओपी जशपुर के मार्गदर्शन में थाना दुलदुला पुलिस ने इस अंधे हत्याकांड का सफाया खुलासा किया। पुलिस के अनुसार, 4 जुलाई को थाना दुलदुला क्षेत्र के ग्राम बोड़ाजोर निवासी चुगरू प्रधान अपने घर में मृत अवस्था में मिले थे। उनके हाथ-पैर बंधे हुए थे। शरीर पर गंभीर चोटों के निशान थे। घटना की सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और वरिष्ठ अधिकारियों के निर्देश पर एफएसएल टीम डॉग स्कॉड की सहायता से घटनास्थल का बारीकी से निरीक्षण कर महत्वपूर्ण वैज्ञानिक साक्ष्य एकत्र किए गए।

एसईसीएल गेवरा में काम से दहल रहा गांव नराईबोध

कोरबा। एसईसीएल गेवरा खदान में हो रहे भारी खनन विस्फोटों ने ग्राम नराईबोध के लोगों का जीवन मुश्किल कर दिया है। इन विस्फोटों के कारण घरों पर पत्थर गिर रहे हैं, दीवारों में दरारें आ गई हैं और पीने के पानी के स्रोत धंस रहे हैं। प्रबंधन की उदासीनता और विस्थापन-रोजगार में देरी से नाराज ग्रामीणों ने अब महाधेराव की चेतावनी दी है। ग्राम नराईबोध गेवरा क्षेत्र के अंतर्गत आता है। ग्रामीणों का आरोप है कि दोपहर में होने वाले विस्फोट इतने भीषण होते हैं कि पूरा गांव दहल उठता है। डर के मारे लोग अपने घर छोड़कर बाहर भागते हैं। कई मकानों की दीवारों और छतों में चौड़ी दरारें आ चुकी हैं, जिससे मानसून में बड़ी दुर्घटना का खतरा है। हाल ही में एक गरीब परिवार के घर में विस्फोट का एक बड़ा पत्थर एक्स्प्लेस चادر तोड़कर सीधे कमरे में गिरा था। उस समय परिवार के लोग अंदर आराम कर रहे थे, गनीमत रही कि कोई हताहत नहीं हुआ। अगले ही दिन चادر ठीक करते समय फिर विस्फोट हुआ और उसी जगह दूसरा पत्थर गिरा। गांव में नलकूप और कुएं भी धंस गए हैं।

जलभराव बना परेशानी; जूझते रहे स्कूली बच्चे-राहगीर

कोरबा। सोमवार सुबह से हो रही तेज बारिश ने कोरबा जिले को बुरी तरह प्रभावित किया है। कोरबा-बालको मुख्य मार्ग पर घुटने तक पानी भर गया, जिससे आवागमन पूरी तरह बाधित हो गया। स्कूली बच्चों, कर्मचारी और राहगीर घंटों तक जलभराव के कारण परेशान होते रहे। बालको के बेलगारी नाला बस्ती में भी घरों के पास तक नाली का पानी पहुंच गया। बस्ती के लोगों का कहना है कि हर बारिश में यही स्थिति होती है, पर निकासी की स्थायी व्यवस्था नहीं है। नगर के कई प्रमुख मार्गों, चौराहों और निचले इलाकों में भी सड़क व नालियों का पानी भर गया। प्रशासन ने नागरिकों से सावधानी बरतने और निचले इलाकों में न जाने की अपील की है। इधर, विकासखंड करतला के ग्राम पंचायत भैसामुड़ा स्थित जोगीनाला में करोड़ों रुपये की लागत से बनी पुलिया पहली ही बारिश में ध्वस्त हो गई। तेज बहाव से पुलिया का एक हिस्सा टूटकर बह गया और सड़क पर गहरे गड्ढे बन गए। क्षतिग्रस्त पुलिया की तत्वीरें सामने आने के बाद निर्माण की गुणवत्ता पर गंभीर सवाल उठ रहे हैं।

पुलिस अभिरक्षा से चोरी की आरोपी महिला फरार

बालोद। पुलिस अभिरक्षा से एक महिला आरोपी के फरार होने के मामले में बालोद पुलिस अधीक्षक योगेश पटेल ने कड़ा रुख अपनाया है। इ्यूटी के दौरान घोर लापरवाही और सुरक्षा में चूक बरतने के आरोप में एसपी ने एक प्रधान आरक्षक और दो आरक्षकों को तत्काल प्रभाव से निर्लंबित (सस्पेंड) कर दिया है। पुलिस विभाग द्वारा की गई प्रारंभिक जांच में सुरक्षा व्यवस्था में गंभीर खामियां पाई गईं, जिसके बाद यह अनुशासनात्मक कार्रवाई की गई। एसपी योगेश पटेल ने दो ट्रक शब्दों में कहा है कि कर्तव्य के प्रति लापरवाही किसी भी कीमत पर बर्दाश्त नहीं की जाएगी। नयापारा इलाके में हुई करीब 2 लाख रुपये की चोरी के मामले में पुलिस ने एक संदिग्ध महिला को हिरासत में लिया था। मूल रूप से बालोद जिले के कलकसा गांव की रहने वाली यह महिला वर्तमान में नयापारा में ही रह रही थी। शनिवार को पुलिस टीम उसे पूछताछ के लिए लेकर आई थी। थाना परिसर में पूछताछ और अभिरक्षा के दौरान महिला पुलिसकर्मियों को चकमा देकर रफूचककर हो गई।

पीएमश्री एकलव्य आदर्श आवासीय विद्यालय में प्रवेश प्रारंभ

एमसीबी। भारत सरकार के जनजातीय कार्य मंत्रालय तथा राष्ट्रीय आदिवासी छात्र शिक्षा समिति, नई दिल्ली के अधीन संचालित पीएम श्री एकलव्य आदर्श सह-शैक्षणिक आवासीय विद्यालय, पोड़ीडीह, विकासखंड खड़गवां, जिला मनेन्द्रगढ़-चिरमिरी-भरतपुर (एमसीबी) ने शैक्षणिक सत्र 2026-27 के लिए लेटरल एंट्री के माध्यम से कक्षा 7वीं एवं 11वीं की रिक्त सीटों पर प्रवेश हेतु आवेदन आमंत्रित किए हैं। विद्यालय प्रबंधन द्वारा जारी प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार इच्छुक एवं पात्र छात्र-छात्राएं निर्धारित फ़ारूप में ऑफ़लाइन आवेदन कर प्रवेश प्रक्रिया में शामिल हो सकते हैं। जारी सूचना के अनुसार विद्यालय में कक्षा 7वीं में कुल 3 रिक्त सीटें उपलब्ध हैं, जिनमें 1 बालक एवं 2 बालिकाओं को प्रवेश दिया जाएगा। वहीं कक्षा 11वीं में कुल 4 रिक्त सीटें हैं, जिनमें 3 बालक एवं 1 बालिका का चयन किया जाएगा। कक्षा 7वीं में प्रवेश चयन प्रक्रिया के आधार पर किया जाएगा, जबकि कक्षा 11वीं में प्रवेश कक्षा 10वीं के प्रसांक एवं मेरिट के आधार पर होगा।

मुख्यमंत्री कन्या विवाह योजना में गिलट के मंगलसूत्र का खेल, जांच में गड़बड़ी सही

मनेंद्रगढ़ चिरमिरी भरतपुर। छत्तीसगढ़ सरकार की महत्वाकांक्षी मुख्यमंत्री कन्या विवाह योजना जिले में गंभीर अनियमितताओं के आरोपों से घिर गई है। गरीब परिवारों की बेटियों के सम्मान और भरोसे से जुड़ी इस योजना में चांदी के नाम पर कथित तौर पर गिलट के मंगलसूत्र बांटे जाने का मामला जिला स्तरीय जांच में सही पाया गया है। इसके बावजूद अब तक किसी जिम्मेदार अधिकारी पर ठोस कार्रवाई नहीं होने से पूरे मामले पर सवाल उठने लगे हैं।

10 फरवरी 2026 को खड़गवां विकासखंड के चनवाडीखंड महामाया मंदिर में आयोजित सामूहिक विवाह



समारोह में 184 जोड़ों का विवाह कराया गया था। शासन की ओर से नवविवाहिताओं को उपहार सामग्री के साथ चांदी के मंगलसूत्र भी वितरित किए गए। विवाह के कुछ समय बाद कई महिलाओं ने मंगलसूत्र की

की। समिति ने दस्तावेजों और वितरित सामग्री की जांच के बाद अपनी रिपोर्ट में शिकायत को सही माना और अनियमितता की पुष्टि की। जांच रिपोर्ट के आधार पर महिला एवं बाल विकास विभाग के जिला कार्यक्रम अधिकारी आदित्य शर्मा के खिलाफ कार्रवाई की अनुशंसा करते हुए विभाग के संचालक को पत्र भी भेजा गया हालांकि मामले ने उस समय नया मोड़ ले लिया, जब विभाग के संचालक स्तर से प्रारंभिक तौर पर किसी भी प्रकार की गड़बड़ी से इनकार कर दिया गया। इससे जिला प्रशासन की जांच रिपोर्ट और विभागीय रुख के बीच विरोधाभास खुलकर सामने आ गया। अब जिला

कार्यक्रम अधिकारी आदित्य शर्मा का कहना है कि उन्हें संचालक कार्यालय से कारण बताओ नोटिस जारी किया गया था, जिसका जवाब उन्होंने प्रस्तुत कर दिया है।

इस पूरे प्रकरण ने सरकारी योजनाओं की पारदर्शिता और निगरानी व्यवस्था पर गंभीर प्रश्नचिह्न लगा दिए हैं। सवाल यह भी है कि जब जिला जांच में अनियमितता प्रामाणित हो चुकी है, तो आखिर दोषियों पर कार्रवाई में देरी क्यों हो रही है? गरीब बेटियों के नाम पर संचालित योजना में यदि वास्तव में गड़बड़ी हुई है, तो इसके लिए जवाबदेही तय होना भी उतना ही जरूरी है।

बीजेपी कांग्रेस ने छत्तीसगढ़ को लूट का अड्डा बनाया: सौरभ झा

बस्तर। छत्तीसगढ़ के बस्तर जिले में रविवार को आम आदमी पार्टी ने प्रेसवार्ता किया। जगदलपुर में आम आदमी पार्टी ने आगामी चुनावों को लेकर बड़ा राजनीतिक दावा किया है। पार्टी के प्रदेश सह प्रभारी सौरभ झा ने कहा कि बीजेपी और कांग्रेस ने छत्तीसगढ़ को सिर्फ लूट का अड्डा बनाया है और अब आम आदमी पार्टी जनता के सामने एक मजबूत विकल्प बनकर उभरेगी। उन्होंने घोषणा की कि पार्टी पूरे प्रदेश की सभी विधानसभा सीटों पर अपने दम पर चुनाव लड़ेगी और अगले महीने से केंद्रीय नेतृत्व का विधानसभा स्तर पर दौरा शुरू होगा। प्रेस वार्ता में आम आदमी पार्टी के प्रदेश सह प्रभारी सौरभ



झा ने पार्टी की आगामी रणनीति साझा की। उन्होंने बताया कि 1 जुलाई से प्रदेशभर में सदस्यता अभियान शुरू किया गया है। जिसके माध्यम से सभी वर्गों को पार्टी से जोड़ने का प्रयास किया जा रहा है। सौरभ झा ने कहा कि वर्ष 2023 में इंडिया गठबंधन का हिस्सा होने के कारण पार्टी सभी सीटों पर चुनाव नहीं लड़ सकी। लेकिन अब गठबंधन से अलग

होकर आगामी चुनाव पूरे दमखम के साथ सभी विधानसभा सीटों पर लड़ा जाएगा।उन्होंने कांग्रेस पर सहयोगी दलों को नुकसान पहुंचाने का आरोप लगाया और कहा कि इस बार पार्टी पूरी तैयारी के साथ मैदान में उतरेगी। आम आदमी पार्टी जनता से जुड़े हर मुद्दे पर उनकी आवाज बनेगी और प्रदेश में एक मजबूत राजनीतिक विकल्प के रूप में काम करेगी।

संक्षिप्त समाचार

डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी की जयंती पर राज्यपाल ने दी श्रद्धांजलि

रायपुर। प्रखर राष्ट्रवादी नेता एवं महान शिक्षाविद् डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी की जयंती पर आज लोक भवन में राज्यपाल श्री रमेन डेका ने उनके चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित कर भावभीनी श्रद्धांजलि दी। राज्यपाल ने कहा कि

डॉ. मुखर्जी का राष्ट्र की एकता, अखंडता और लोकतांत्रिक मूल्यों के प्रति समर्पण सभी देशवासियों के लिए प्रेरणास्रोत है। उन्होंने युवाओं से उनके आदर्शों को अपनाकर राष्ट्र निर्माण में सक्रिय योगदान देने का आह्वान किया। लोक भवन के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भी डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के चित्र पर पुष्प अर्पित कर उन्हें श्रद्धांजलि दी।

नगर निगम ने याद किया जयंती पर डॉ . श्यामा प्रसाद मुखर्जी को, दी श्रद्धांजलि

रायपुर। नगर निगम रायपुर के संस्कृति विभाग द्वारा सोमवार को डा श्यामा प्रसाद मुखर्जी का जयन्ती पर शारदा चौक के किनारे स्थित उनकी प्रतिमा स्थल पर पुष्पांजलि कार्यक्रम का आयोजन किया गया। नगर निगम सभापति सूर्यकान्त राठौड़ ने डा श्यामा प्रसाद मुखर्जी की आदमकद प्रतिमा पर माल्यार्पण किया। पुष्पांजलि कार्यक्रम में विधायक सोनील सोनी, नगर निगम सभापति सूर्यकान्त राठौड़, नगर निगम संस्कृति विभाग के अध्यक्ष अमर गिदवानी, नगर निगम रायपुर के पूर्व पार्षद जयन्ती भाई पटेल सहित गणमान्यजनों, सामाजिक कार्यकर्त्ताओं, नवयुवकों, आमजनों, नगर निगम अधिकारियों, कर्मचारियों ने पूर्व डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी का जयन्ती पर सादर नमन किया।

छत्तीसगढ़ में झमाझम बारिश, रायपुर में 3 दिन में 21५ मिमी वर्षा

रायपुर। छत्तीसगढ़ में मानसून अब पूरी तरह सक्रिय हो गया है। शनिवार से राजधानी रायपुर समेत प्रदेश के कई जिलों में लगातार

बारिश हो रही है। इससे लोगों को गर्मी और उमस से राहत मिली है। वहीं, बारिश का इंतजार कर रहे किसानों के लिए भी यह अच्छी खबर है। पिछले तीन दिनों में रायपुर में करीब 215 मिलीमीटर बारिश रिकॉर्ड की गई है। मौसम विभाग ने अगले 24 से 48 घंटे के लिए येलो, ऑरेंज और रेड अलर्ट जारी किया है। विभाग के अनुसार, उत्तर-पश्चिम बंगाल की खाड़ी में बने कम दबाव के क्षेत्र (लो प्रेशर) की वजह से प्रदेश में भारी बारिश की स्थिति बनी हुई है। मौसम वैज्ञानिक अगापित एक्का के अनुसार, पिछले 24 घंटे में मध्य छत्तीसगढ़ के कई इलाकों में अच्छी बारिश हुई है। अगले 24 घंटे में भी अधिकांश जगहों पर हल्की से मध्यम बारिश और कुछ स्थानों पर भारी बारिश होने की संभावना है। उन्होंने बताया कि 8 जुलाई से प्रदेश में मानसून की गतिविधि कमजोर पड़ सकती है। फिलहाल प्रदेश का अधिकतम तापमान 24 से 34 डिग्री सेल्सियस के बीच बना हुआ है।

रामानुजगंज जलाशय योजना के कार्यों के लिए 1.86 करोड़ रुपए स्वीकृत

रायपुर। छत्तीसगढ़ शासन जल संसाधन विभाग द्वारा बलरामपुर-रामानुजगंज जिले के विकासखण्ड-रामचंद्रपुर की रामानुजगंज जलाशय योजना के जीर्णोद्धार एवं सौंदर्यीकरण कार्य के लिए एक करोड़ 46 लाख 60 हजार रूपए स्वीकृत किए गए हैं। योजना के प्रस्तावित कार्यों के पूर्ण होने पर कुल 202 हेक्टेयर क्षेत्र में क्षेत्रीय किसानों को फसलों की सिंचाई के लिए सुविधा मिलेगी। योजना के कार्यों को कराने के लिए मुख्य अभियंता हसदेव गंगा कछार जल संसाधन विभाग अम्बिकापुर को प्रशासकीय स्वीकृति दी गई है।

ईडी (ओ एंड एम) बने खंडेलवाल, दो अधिकारियों को मिली पतेन्नति

रायपुर। छत्तीसगढ़ स्टेट पावर कंपनीज में कार्यपालक निदेशकों के प्रभार में परिवर्तन किया गया है तथा दो अधिकारियों को मुख्य अभियंता के पद पर पदोन्नति प्रदान की गई है। छत्तीसगढ़ स्टेट पावर डिस्ट्रीब्यूशन कंपनी के कार्यपालक निदेशक (संचारण एवं संधारण) ईडी (ओ एंड एम) के पद पर श्री संजय खंडेलवाल की नियुक्ति की गई है। वे पूर्व में दुर्ग के कार्यपालक निदेशक के पद पर कार्यरत थे। वहीं, राजनांदगांव के कार्यपालक निदेशक श्री शिरीष शैलेट का स्थानांतरण दुर्ग क्षेत्रीय कार्यालय में किया गया है। छत्तीसगढ़ स्टेट पावर ट्रांसमिशन कंपनी की मुख्य अभियंता (मानव संसाधन) श्रीमती रश्मि वर्मा द्वारा उक्त आदेश जारी किए गए हैं। गौरतलब है कि मुख्यालय स्थित ईडी (ओ एंड एम) कार्यालय से पूरे प्रदेश की विद्युत वितरण व्यवस्था का संचारण एवं संधारण किया जाता है। इस पद पर पूर्व में श्री जे.एस. नेताम कार्यरत थे। उनकी सेवानिवृत्ति के बाद श्री संजय खंडेलवाल को यह दायित्व सौंपा गया है। इसके साथ ही ट्रांसमिशन कंपनी के मानव संसाधन विभाग द्वारा पदोन्नति के दो आदेश भी जारी किए गए हैं। इनके तहत छत्तीसगढ़ स्टेट पावर डिस्ट्रीब्यूशन कंपनी के अतिरिक्त मुख्य अभियंता दिलीप कुमार भोजक एवं श्री एच.के. मेश्राम को मुख्य अभियंता के पद पर पदोन्नत किया गया है।

बारिश के बाद जलभराव पर विपक्ष के आरोपों पर डिप्टी सीएम साव का पलटवार, कहा-

किसानों को राहत मिली है, लेकिन कांग्रेस उसे भी नहीं पचा पा रही

रायपुर। प्रदेश में बारिश के बाद जलभराव की स्थिति पर कांग्रेस के आरोप पर उप मुख्यमंत्री अरुण साव ने पलटवार किया है। उन्होंने कहा कि किसानों को राहत मिली है, लेकिन कांग्रेस उसे भी नहीं पचा पा रही। बारिश होगी तो कुछ स्थानों पर जलभराव भी होगा। प्रशासन पूरी मुस्तैदी से काम कर रहा है, और जलभराव की स्थिति जल्द सामान्य हो जाएगी।

उप मुख्यमंत्री अरुण साव ने चिंतन शिविर को लेकर मीडिया से चर्चा में कहा कि देश के विभिन्न क्षेत्रों के विशेषज्ञों, भारत सरकार के अधिकारियों, नीति आयोग के प्रतिनिधियों और समाज के कई महत्वपूर्ण लोगों का मार्गदर्शन मिला, इससे सरकार के नीति निर्धारण में बड़ा लाभ होगा। शासन प्रणाली कैसी होनी चाहिए, योजनाएं कैसे बनाई जाएं और प्रशासन को किस दिशा में काम करना चाहिए। इन सभी विषयों पर विस्तृत चर्चा हुई।



उन्होंने कहा कि प्राकृतिक खेती पर दो दिनों तक मंथन हुआ। इससे कम लागत में बेहतर खेती और रासायनिक खेती के नुकसान को समझने का अवसर मिला, पर्यटन को बढ़ावा देने और राज्य की अर्थव्यवस्था में उसके योगदान पर भी चर्चा हुई मंत्रियों ने भी अपनी जिज्ञासाएं रखीं, इसका लाभ पूरे प्रदेश को मिलेगा।

वहीं चिंतन शिविर को लेकर कांग्रेस द्वारा सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर किए गए पोस्ट पर अरुण साव ने कहा कि कांग्रेस की स्थिति यही है कि सत्ता में रहते समय वह

भ्रष्टाचार में व्यस्त रहती है, और सत्ता से बाहर होने पर दूसरी बातें याद आती हैं। हमारी सरकार जनहित और राष्ट्रहित में काम कर रही है। ऐसे कार्य कांग्रेस की सोच से बहुत दूर हैं, इसलिए वह केवल आलोचना करती है।

जल जीवन मिशन का भुगतान नहीं होने पर ठेकेदारों के एक दिवसीय हड़ताल पर जाने पर उप मुख्यमंत्री साव ने कहा कि राज्य सरकार ने राज्य मद से भी राशि देकर ठेकेदारों को भुगतान किया है। भारत सरकार की नई व्यवस्था के तहत भी भुगतान की प्रक्रिया जारी है। सरकार इस मामले को गंभीरता से ले रही है। बड़े पैमाने पर भुगतान हो चुका है, और जिन ठेकेदारों के काम पूरे हो चुके हैं, उन्हें ठेकेदारों के काम पूरे हो चुके हैं, उन्हें ठेकेदारों के काम पूरे हो चुके हैं, उन्हें ठेकेदारों के काम पूरे हो चुके हैं।

नए मेडिकल कॉलेज के शिलान्यास पर पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश

नकटी गांव के पीड़ितों के लिए कांग्रेस करेगी बड़ा आंदोलन

बैठक में बनी रणनीति, राज्यपाल से जल्द करेंगे मुलाकात

रायपुर। नकटी गांव के प्रभावित परिवारों को न्याय दिलाने के लिए कांग्रेस आने वाले दिनों में बड़े आंदोलन की तैयारी में है। जांच समिति की बैठक में चरणबद्ध आंदोलन की रणनीति पर मंथन किया गया। इस दौरान प्रशासनिक कार्रवाई की समीक्षा की भी गई। अब प्रेस कॉन्फ्रेंस से लेकर लोकभवन में प्रदर्शन तक की तैयारी है। वहीं कांग्रेस मुख्यमंत्री निवास का घेराव भी कर सकती है।

कांग्रेस ने पूरे घटनाक्रम के तथ्य सबसे पहले जनता के सामने रखने की रणनीति बनाई है। दोषी अधिकारियों के खिलाफ एफआईआर दर्ज करने की मांग की जाएगी। साथ ही राज्यपाल से हस्तक्षेप का आग्रह करेगी और लोकभवन में प्रदर्शन भी करेगी।वहीं मुख्यमंत्री निवास घेराव की मांग का सकता है। इसके साथ ही कांग्रेस प्रभावित परिवारों के पुनर्वास, उचित मुआवजे और दर्ज प्रकरणों की वापसी की मांग को लेकर भी लड़ाई



लड़ेगी। प्रदेश कांग्रेस कमेटी जांच दल के सदस्य भावेश बघेल ने कहा कि सम्मानपुर-नकटी की घटना केवल गरीब परिवारों के आशियाने उजाड़ने की घटना नहीं है, बल्कि यह ईंसानियत, संवेदनशीलता और मानवीय मूल्यों को शर्मसार करने वाली घटना है। बुलडोजर कार्रवाई के बाद मलबे में बेजुबान जानवरों और गौ माता के दबे होने की जानकारी सामने आई, जिसने पूरे प्रदेश को झकझोर दिया है। यह केवल प्रशासनिक लापरवाही नहीं, बल्कि संवेदनहीन शासन का जीवंत उदाहरण

खोड़ेगी। समिति की बैठक में आंदोलन की विस्तृत रणनीति तय कर ली गई है और अब न्याय मिलने तक संघर्ष लगातार जारी रहेगा। कांग्रेस सड़क से लेकर सदन, राजभवन और न्यायालय तक हर लोकतांत्रिक मंच पर पीड़ित परिवारों की आवाज बुलंद करेगी। जब तक प्रभावित परिवारों को न्याय, सम्मानजनक पुनर्वास, उचित मुआवजा तथा दोषी अधिकारियों पर कठोर कार्रवाई नहीं होती, तब तक कांग्रेस पार्टी पूरी ताकत और प्रतिबद्धता के साथ उनके साथ खड़ी रहेगी।

बैठक में मुख्य रूप से जांच दल के संयोजक और पूर्व मंत्री धनेन्द्र साहू, पूर्व मंत्री डॉ। शिवकुमार डहरिया, पूर्व विधायक विकास उपाध्याय, पूर्व विधायक अनीता शर्मा, जिला कांग्रेस कमेटी रायपुर शहर अध्यक्ष श्रीकुमार मेनन, जिला कांग्रेस कमेटी रायपुर ग्रामीण अध्यक्ष राजेंद्र (पप्पू) बंजारे और पीड़ित परिवार के सदस्य उपस्थित रहे।

सीएसपीडीसीएल ने लागू की पीएम सूर्यघर तर्जुअल नेट मीटरिंग व्यवस्था

रायपुर। छत्तीसगढ़ स्टेट पावर डिस्ट्रीब्यूशन कंपनी लिमिटेड सीएसपीडीसीएल के सिटी साउथ डिवीजन ने स्वच्छ एवं हरित ऊर्जा को बढ़ावा देते हुए रायपुर के लॉर्ड्स सिटी में वर्चुअल नेट मीटरिंग परियोजना का सफल क्रियान्वयन किया है। इस व्यवस्था के माध्यम से एक साझा रूफटॉप सोलर संयंत्र से अनेक परिवारों को सौर ऊर्जा का लाभ मिल रहा है। परियोजना के अंतर्गत 49.2 किलोवाट एवं 58.2 किलोवाट क्षमता के दो रूफटॉप सोलर संयंत्र स्थापित किए गए हैं। इनसे कुल 27 उपभोक्ताओं को वर्चुअल नेट मीटरिंग सुविधा दी जा रही है। इस परियोजना का कार्य इलेक्ट्रोमैक डिवाइसेस के श्री मारुफ द्वारा पूरा किया गया। भारत सरकार की प्रधानमंत्री सूर्य घर मुफ्त बिजली योजना के अंतर्गत रूफटॉप सोलर संयंत्रों पर आकर्षक सब्सिडी उपलब्ध है। वर्चुअल नेट मीटरिंग व्यवस्था हाइसिंग सोसायटी एवं अपार्टमेंट्स के लिए उपयोगी है क्योंकि इसमें प्रत्येक मकान पर अलग सोलर प्लॉट लगाने की जरूरत नहीं होती। एक साझा सोलर संयंत्र से उत्पन्न बिजली का लाभ सभी पंजीकृत उपभोक्ताओं को मिलता है, जिससे बिजली बिल में बचत होती है।

डॉ. तीजन बाई के सम्मान में गनियारी के शासकीय हाई-हायर सेकेंडरी स्कूल का होगा नामकरण : शिक्षा मंत्री यादव

रायपुर। स्कूल शिक्षा मंत्री श्री गजेन्द्र यादव ने विश्वविख्यात पंखानी गायिका, पद्मविभूषण से सम्मानित एवं छत्तीसगढ़ की लोकसंस्कृति की अग्रप्रतिम धरोहर डॉ. तीजन बाई के गृहग्राम गनियारी स्थित निवास पहुंचकर उनके पार्थिव शरीर पर पुष्प अर्पित कर भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। इसके उपरांत वे उनकी अंतिम यात्रा में शामिल हुए तथा दाह संस्कार कार्यक्रम तक उपस्थित रहकर श्रद्धासुमन अर्पित किए। उन्होंने घोषणा किया कि उनके गृहग्राम

गनियारी स्थित शासकीय हाई-हायर सेकेंडरी स्कूल का नामकरण डॉ. तीजन बाई शासकीय हाई-हायर सेकेंडरी विद्यालय, गनियारी के नाम से किया जाएगा।

शिक्षा मंत्री यादव ने कहा कि डॉ. तीजन बाई ने अपनी अद्वितीय कला-साधना, ओजस्वी वाणी और आजीवन समर्पण के माध्यम से छत्तीसगढ़ की समृद्ध लोकसंस्कृति को राष्ट्रीय ही नहीं, बल्कि अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर विशिष्ट पहचान दिलाई। उनका निधन छत्तीसगढ़ की सांस्कृतिक चेतना के

एक स्वर्णिम अध्याय का अवसान है। उन्होंने ईश्वर से दिवंगत पुण्यात्मा को अपने श्रीचरणों में स्थान प्रदान करने तथा शोकाकुल परिजनों एवं असंख्य प्रशंसकों को इस दुःख की घड़ी में संबल देने की प्रार्थना की। मंत्री यादव ने कहा कि डॉ. तीजन बाई का संपूर्ण जीवन लोकपरंपराओं, संस्कृति और कला के संरक्षण एवं संवर्धन के लिए समर्पित रहा। उनकी कला साधना, संघर्ष और उपलब्धियां आने वाली पीढ़ियों के लिए सदैव प्रेरणास्रोत बनी रहेंगी। छत्तीसगढ़ की सांस्कृतिक

पहचान को विश्व पटल पर स्थापित करने में उनका योगदान सदैव अविस्मरणीय रहेगा। श्रद्धांजलि सभा को संबोधित करते हुए शिक्षा मंत्री गजेन्द्र यादव ने डॉ. तीजन बाई के सम्मान में उनके गृहग्राम गनियारी स्थित शासकीय हाई-हायर सेकेंडरी स्कूल का नामकरण डॉ. तीजन बाई शासकीय हाई-हायर सेकेंडरी विद्यालय, गनियारी के नाम से किया जाएगा। राज्य सरकार का यह निर्णय महान लोककलाकार के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगा।

रायपुर नगर निगम में चरम पर भ्रष्टाचार : ठेकेदारों ने कहा- बिना कमीशन नहीं होता भुगतान

■ 100 करोड़ से ज्यादा बकाया, अधिकारी, जोन अध्यक्ष, पार्षद के रेट अलग-अलग

रायपुर। रायपुर नगर निगम के ठेकेदार भुगतान नहीं मिलने से परेशान हैं। आक्रोशित ठेकेदारों का आरोप है कि बिना चढ़ावा कमीशन दिए फाइलें आगे नहीं बढ़ रही है। भुगतान महीनों से सातों से अटका पड़ा है और गुणवत्ताहीन कार्य का ठीकरा उनके सिर फोड़ा जा रहा है। काम बंद करने की चेतावनी दी गई थी, लेकिन सुनवाई नहीं होने पर आज काम बंद कर नगर निगम के सामने प्रदर्शन करने को मजबूर हैं। वहीं ठेकेदारों ने नगर निगम कमिश्नर और महापौर पर गंभीर आरोप लगाए हैं।

ठेकेदारों के मुख्य आरोप

भुगतान में भारी देरी- 100 करोड़ रुपये से ज्यादा का भुगतान लंबित है। कई ठेकेदारों को 6 महीने, 1 साल या डेढ़ साल से भुगतान नहीं हुआ है। ठेकेदारों का कहना है कि बाजार बैंक से कर्ज लेकर काम करने वाले ठेकेदार ब्याज के चंगुल में फंसे हैं जबकि निगम के अधिकारी जमा राशि पर



ब्याज का गोरख धंधा कर रहे हैं।

हर फाइलों का अलग रेट- हर फाइल का अलग-अलग रेट तय है। 30-40% तक कटौती का आरोप है। 18% जोएसटी, 5% सिक्वोरिटी आदि कटौतियों के बाद भी अतिरिक्त कट मांगा जाता है। जोन अध्यक्ष और पार्षद भी अपना प्रतिशत तय करते हैं। मेरे जोन में काम करना है तो मेरा कट देना होगा।

तानाशाही और बेगारी- अधिकारियों के लिए बेगारी मुफ्त काम कराने का भी आरोप लगाया गया। इससे काम समय पर पूरा नहीं होता है तो फिर पेनल्टी ठेकेदारों पर लगाया जाता है, लेकिन समय से पहले काम पर कोई लाभ नहीं मिलता है।

गुणवत्ता बनाम

कमीशन- अधिकारी जोन अध्यक्ष और पार्षद कमीशन खाने के बाद गुणवत्ता हीन काम स्वीकार कर लेते हैं, लेकिन बाद में गड़बड़ी का दोष ठेकेदारों पर मढ़ दिया जाता है। जब आप विकास की पैसा खा लेंगे तो मजबूत काम कहाँ से होगा ?

ठेकेदार ने बताया, सुरेंद्र श्रीवास्तव जोन सात में हैं। मेरे को जबरन 5 लाख का सामान बेचा जो चोरी का समान था इसके कारण मेरे को जेल जाना पड़ा। इज्जत भी गई और धन भी, एक साल से डेढ़ करोड़ का भुगतान अभी भी अटका है। कई बार आवेदन दिया लेकिन कहीं सुनवाई नहीं हुई। हर स्तर के अधिकारियों का अलग-अलग पचास हजार से एक लाख रुपए तक रेट तय है। ठेकेदारों का कहना है कि नियम-कानून नहीं, तानाशाही चल रही है। वे निगम के बाहर धरना, ढोल-ताशा बजाकर सोए अधिकारियों को जेल नहीं होता है तो फिर पेनल्टी ठेकेदारों पर लगाया जाता है, लेकिन समय से पहले काम पर कोई लाभ नहीं मिलता है।

लेकिन अधिकारी नहीं मान रहे ना सुन रहे हैं।

ठेकेदार संघ के अध्यक्ष दुर्गाेश ने कहा, रिश्त कमीशनखोरी ये आज की बात नहीं है। निगम का अटल नियम है, लेकिन वर्तमान के हमारे कमिश्नर साहब के आने के बाद और ज्यादा व्यवस्था बिगड़ी है, उनके ऑडिटर के चैम्बर के बाहर लिखा होता है ठेकेदार हमसे ना मिले, तो कहाँ और किससे मिले? हमारी फाइल गायब हो जाती है, कहाँ है पता नहीं चलता है तो हमें तो अधिकारियों के पास जाना पड़े कार्यालय में जाना पड़े कब तक हम अपने काम के पैसा के लिए इंतजार करेंगे? यह पहला मामला नहीं है। पिछले महीनों में सफाई ठेकेदारों ने 4 महीने के बकाए को लेकर हड़ताल की थी, जिससे शहर की सफाई व्यवस्था प्रभावित हुई। पानी टैंकर टैंडर, जमीन फाहलें गायब और अन्य कोटालों के आरोप भी लग चुके हैं।

सुलगते सवाल ?

● क्या रायपुर नगर निगम में सिस्टमैटिक कमीशन रैकेट चल रहा है, जिसमें अधिकारी, जोन अध्यक्ष और पार्षद शामिल हैं ?

● 100 करोड से ज्यादा बकाया के

मुख्यमंत्री की घोषणा के अनुरूप

समाधान योजना की अवधि 30 सितंबर तक बढ़ी

रायपुर। मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय की घोषणा के अनुरूप छत्तीसगढ़ स्टेट पावर डिस्ट्रीब्यूशन कंपनी ने मुख्यमंत्री बिजली बिल समाधान योजना-2026 की अवधि 30 सितंबर 2026 तक बढ़ाने के आदेश जारी कर दिए हैं। मुख्य अभियंता (मानव संसाधन) कार्यालय द्वारा जारी संशोधित आदेश के अनुसार योजना की अवधि, जो पूर्व में 30 जून 2026 तक निर्धारित थी, अब 30 सितंबर 2026 तक प्रभावशील रहेगी।

मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने मुख्यमंत्री बिजली बिल समाधान योजना को उपभोक्ताओं से मिल रहे अच्छे प्रतिसाद को देखते हुए इसकी अवधि 30 सितंबर 2026 तक बढ़ाने की घोषणा की थी। उल्लेखनीय है कि कोरोनाकाल के दौरान आर्थिक कठिनाइयों के कारण बड़ी संख्या में घरेलू, बीपीएल एवं कृषि उपभोक्ता समय पर बिजली बिल जमा नहीं कर सके थे। ऐसे उपभोक्ताओं को राहत प्रदान करने के उद्देश्य से

राज्य शासन ने मुख्यमंत्री बिजली बिल समाधान योजना प्रारंभ की। इस योजना के अंतर्गत प्रदेश के 28 लाख 42 हजार पात्र उपभोक्ताओं को बकाया बिजली बिल में लगभग 757 करोड़ रुपये की राहत प्रदान की जा रही है। मुख्यमंत्री बिजली बिल समाधान योजना के तहत निम्नदाब घरेलू, बीपीएल एवं कृषि श्रेणी के अशासकीय उपभोक्ताओं को बकाया बिजली बिल की मूल राशि एवं अधिभार में नियमानुसार छूट का लाभ प्रदान किया जा रहा है। योजना की अवधि बढ़ने से ऐसे पात्र उपभोक्ताओं को तीन माह का अतिरिक्त अवसर मिलेगा, जो अब तक किसी कारणवश इसका लाभ नहीं ले सके हैं। पावर कंपनी ने सभी पात्र उपभोक्ताओं से अपील की है कि वे 30 सितंबर 2026 तक अपने निकटतम विद्युत कार्यालय से संपर्क कर योजना का लाभ उठाएं तथा बकाया बिजली बिलों का निराकरण कर छूट का लाभ प्राप्त करें।

यूपी भाजपा की अगली चुनावी चुनौती

बदी नारायण

भारतीय जनतंत्र की राजनीति में अनेक प्रकार के नेतृत्व उभरे हैं। जनतंत्र की राजनीति में व्यावहारिक स्तर पर नेतृत्व के तीन आधारभूत तत्व माने गए हैंःङ्कजन गोलबंदी के गुण और चमत्कारिक क्षमता, प्रभावी संवाद शक्ति और गहन विकास दृष्टि। भारतीय जनतंत्र इस मामले में धनी रहा है, क्योंकि उसके पास अनेक स्तरों पर उपर्युक्त गुणों से लैस नेता उभरते रहे हैं। महात्मा गांधी, जवाहरलाल नेहरू, बाबा साहेब आंबेडकर, सरदार पटेल, राम मनोहर लोहिया, जयप्रकाश नारायण, इंदिरा गांधी, अटल बिहारी वाजपेयी जैसे अनेक नेता देश व समाज को अपने नेतृत्व से लाभान्वित करते रहे हैं। आज के समय में वर्तमान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भारतीय जनतंत्र, विकास और राष्ट्रनिर्माण की राजनीति को अपने नेतृत्व के गुणों से अत्यंत ऊंचाई पर ला खड़ा किया है। उन्होंने ऐसी लोकप्रियता हासिल की है, जिसने दुनिया के बड़े नेताओं को भी हैरान कर दिया है। विकास की अपनी दृष्टि एवं उससे कार्यान्वयन की शक्ति से उन्होंने भारत को विकसित बनाने की दिशा में काफी आगे बढ़ाया है। उन्होंने अपनी पार्टी को तो महान सफलताएं दिलाई ही हैं, अपने साथ एक सक्षम नेतृत्व टोली भी खड़ी की है। देश स्तर पर उनकी टीम में अमित शाह, निर्मला सीतारमण, एस. जयशंकर, नितिन गडकरी, राजनाथ सिंह, धर्मेंद्र प्रधान जैसे नेताओं के भालावा राज्य स्तर पर योगी आदित्यनाथ, हिमंत बिस्वा सरमा, शुभेंद्र अधिकारी जैसे अनेक लोकप्रिय नेता हैं, जो विकास दृष्टि और लोकप्रियता का बेहतर समन्वय स्थापित करते हैं। समकालीन नेतृत्व में गृहमंत्री अमित शाह का उभार लक्ष्य करने योग्य है। एक घटना का यहां जिक्र करना चाहूंगा। २०१७ में उत्तर प्रदेश का चुनाव था। चुनाव परिणाम क्या होगा, इस पर काफी अस्पष्टता थी। हमलोग अपने क्षेत्रीय अध्ययन के दौरान देख रहे थे कि अमित शाह शहरों, बस्तियों और गांवों में घूम रहे थे। वह प्रदेश के दूरस्थ क्षेत्रों में जाकर अनेक जातियों के जाति सम्मेलनों में भाग ले रहे थे। अभी वोट का दिन दूर था और वह सैकड़ों जाति सम्मेलनों का उद्घाटन या संबोधन कर चुके थे। वह पूरे उत्तर प्रदेश चुनाव को अपने ढंग से क्राफ्ट कर रहे थे। संगठन, संघ, भाजपा के बीच बेहतर संवाद वह स्थापित कर ही चुके थे। जब चुनाव परिणाम आया, तो भाजपा को बड़ी विजय मिली। जाति भाव, हिंदुत्व बोध और विकास चेतना के बीच वह आधार तल पर एक प्रभावी संबंध लगातार रचते जा रहे थे। २०१९ के संसदीय चुनाव में भी भाजपा को उत्तर प्रदेश में बड़ी विजय मिली। उसके बाद तो भाजपा लगातार प्रायः (कुछ को छोड़कर) संसदीय और राज्यों के विधानसभा चुनावों में विजयी होती रही है। इनमें से कई विजयों के सांगठनिक शिल्पकार और रणनीतिकार अमित शाह ही माने गए हैं । प्रधानमंत्री मोदी के विजन और कार्य के आधार तल पर प्रसारित हो रहे असर को राजनीतिक प्रभाव में बदल कर बृ्थ तक पहुंचाने की प्रक्रिया के वह कुशल शिल्पकार बनकर उभरे हैं। किसी भी समाज में नए-नए अंतर्विरोध उभरते हैं। बदलते समय में अंतर्विरोधों के स्वरूप भी बदलते हैं, वह राजनीतिज्ञ लोकप्रिय जन गोलबंदी करने में सफल होता है, जिसमें समाज के बदलते मुख्य अंतर्विरोधों और उनसे सुदृढित हो रहे भावों की गहरी समझदारी होती है। मुझे लगता है कि अमित शाह में भारतीय समाज के बन-बिगड़ रहे अंतर्विरोधों की गहरी समझ है। उत्तर प्रदेश में २०२७ में फिर से विधानसभा चुनाव होने वाले हैं। इस बीच उत्तर प्रदेश के समाज में कई बदलाव आए हैं। उत्तर प्रदेश में आगामी चुनाव में भाजपा को चुनौती है कि कैसे वह अपने आधार वोटों को बचाए रखते हुए उनमें नए-नए सामाजिक समूहों को जोड़ती है।

पुराण दिग्दर्शन

सन्देहभासनिकारणाध्यायः (नौवां अध्याय)

(गतांक से आगे...)

सो देवताओं के वंशज होने के कारण भी हमारे पूर्वजों की आयु अधिक होती थी ।

संवत्सर शब्द का अर्थ दिन भी है

यद्यपि सामान्यतया वर्ष, वत्सर संवत्सर और शर्त्तु आदि शब्द अन्यून तीन सो साठ दिनों के समुदायात्मक काल को कहते हैं तथापि कई आचार्यों ने उक्त शब्दों का अर्थ केवल दिन भी सिद्ध किया है, जैसा कि मीमांसादर्शनों में लिखा है वह प्रसङ्ग इस प्रकार है-

वेद में लिखा है कि-

सहस्रायुः सुकृतश्चरेयम्॥ पंचपंचाशतास्त्रिवृतः संवत्सराः। पंचपंचाशतः पंचदशाः। पंचपंचाशतः सप्तदशाः। पंचपंचाशत एकविंशः। विश्वसृजामयनं सहस्रसंवत्सरम्।

(ताण्ड्यः २५।१८।१)

अर्थात्- सहस्रवर्ष की आयु वाला होकर यज्ञादि

पुण्य कर्मों का अनुष्ठान करूँ (तो ताण्डव की उक्त श्रुति में) पंचपंचाशत् शब्द का अर्थ पंचगुणित पंचाशत् (५५० = २५०) है, यह शब्द इस श्रुति में चार बार आया है अतः (२५०४४=१०००) वर्षों में क्रमशः त्रिवृत, पंचदश, सप्तदश और एकविंश नामक स्तोम सभास होते हैं।

इस आशय को मन में रख कर जैमिनि जी पूर्वपक्ष स्थापन करते हैं।

सहस्रसंवत्सरं तदयुषामसम्भवान्मुष्येषु।

(६।७।३१)

अर्थात्- उपयुक्त ताण्ड्य श्रुति में जो सहस्रवर्षीय यज्ञ का विधान है, यह मनुष्यार्थ नहीं हो सकता क्योंकि मनुष्य की १००० वर्ष की आयु असम्भव है। अपि वा तदधिकारामनुष्य-धर्मः स्यात्।

(६।७।३२)

अर्थात्- क्योंकि शास्त्र में देवादिकों का अधिकार नहीं है।



श्री

चंद्रमा ने किया गुरु-पत्नी का अपहरण: अत्यधिक ऐश्वर्य विवेक को ढक देता है

आशुतोष गर्ग

भगवान ब्रह्मा ने जब प्रजा की सृष्टि का विचार किया, तो उनके मन के संकल्प से महर्षि अत्रि प्रकट हुए। अत्रि अत्यंत धर्मनिष्ठ थे। एक बार उन्होंने निश्चय किया कि वह ऐसा तप करेंगे, जिससे संपूर्ण जगत का हित हो। उन्होंने तीन हजार दिव्य वर्षों तक कठोर तपस्या की। दोनों भूधाएं ऊपर उठाए वह वृक्ष, पर्वत और शिलाखंड की भांति अचल खड़े रहे। उन्होंने न किसी को कष्ट दिया, न कोई इच्छा व्यक्त की। वह केवल सोम स्वरूप दिव्य शक्ति का ध्यान करते हुए ब्रह्मचर्य का पालन करते रहे। उनके तप की तोत्रता इतनी बढ़ गई कि उनका संपूर्ण शरीर ही सोममय हो गया।

एक दिन उनके नेत्रों से जलधारा के रूप में अद्भुत तेज प्रकट हुआ। वह प्रकाश इतना दिव्य था कि दसों दिशाएं आलोकित

हो उठीं। उस तेज को देखकर दिशाओं की देवियां प्रसन्न हो गईं और उन्होंने उसे अपने गर्भ में धारण कर लिया। परंतु, वह तेज इतना प्रबल था कि वह उसे अधिक समय तक संभाल न सकीं। अंततः, वह दिव्य गर्भ दिशाओं के उदर से निकलकर पृथ्वी पर गिर पड़ा। जब वह तेजस्वी गर्भ पृथ्वी पर आया, तब समस्त धरती उसके प्रकाश से जगमगा उठी। ब्रह्मा जी ने संसार के कल्याण हेतु उस दिव्य बालक को अपने रथ पर स्थापित कर लिया। महर्षि अत्रि के उस तेजस्वी पुत्र का नाम सोम पड़ा। उसे चंद्रमा भी कहते हैं। ब्रह्मा जी के सात मानस पुत्रों, भृगु आदि महर्षियों ने वेद-मंत्रों द्वारा चंद्रमा की स्तुति की, जिससे चंद्रमा का तेज और बढ़ गया। तब ब्रह्मा जी ने उन्हें रथ पर बैठाकर



इक्कीस बार पृथ्वी की परिक्रमा कराई। यात्रा के दौरान चंद्रमा का तेज जहां-जहां पृथ्वी पर गिरा, वहां विविध प्रकार की औषधियां उत्पन्न हो गईं। उन्हीं

औषधियों से तीनों लोकों तथा जरापुत्र, अंडज, स्वेदज और उद्भिज्ज प्राणियों का पालन होने लगा। इस प्रकार चंद्रमा समस्त सृष्टि के पोषक बन गए। बाद में, ब्रह्मा जी ने उन्हें बीजों, औषधियों, जल और ब्राह्मणों का अधिपति बनाया। अभिषेक के पश्चात चंद्रमा की शोभा और बढ़ गई।

चंद्रमा का प्रकाश तीनों लोकों में फैलने लगा। प्रजापति दक्ष ने अपनी सत्ताईस कन्याओं का विवाह चंद्रमा से कर दिया। ये सत्ताइस कन्याएं आगे सत्ताइस नक्षत्रों के रूप में प्रसिद्ध हुईं। चंद्रमा ने अपने वैभव और सामर्थ्य के प्रभाव से एक भव्य राजसूय यज्ञ किया।

उसमें उन्होंने एक लाख गाय दान कीं। ऋषि, देवता और समस्त लोक उनका सम्मान करते थे। परंतु, अत्यधिक ऐश्वर्य कभी-कभी विवेक को ढक देता है। धीरे-धीरे चंद्रमा के मन में अहंकार उत्पन्न हो गया। उन्होंने देवगुरु बृहस्पति की पत्नी तारा के अनुपम सौंदर्य को देख उसका अपहरण कर लिया। इस घटना से देवताओं और दैत्यों के बीच भयंकर युद्ध छिड़ गया, जिसे तारकामय युद्ध कहा गया। एक ओर बृहस्पति और भगवान शिव थे, तो दूसरी ओर शुक्राचार्य और चंद्रमा का पक्ष। युद्ध से तीनों लोक संकट में पड़ गए। अंततः ब्रह्मा जी को हस्तक्षेप करना पड़ा। उन्होंने युद्ध रुकवाया तथा तारा को वापस बृहस्पति के पास भेज दिया। परंतु, उस समय तारा गर्भवती थी। इससे यह प्रश्न उठ खड़ा हुआ कि गर्भस्थ बालक का पिता कौन है-बृहस्पति या चंद्रमा?

क्यों भारत को नहीं बनना चीन जैसा देश, कई हैं कारण

विनोद पाठक

पेप्सिको की पूर्व सीईओ इंद्रा नूई ने भारत और चीन के विकास मॉडल को लेकर एक महत्वपूर्ण टिप्पणी की। दरअसल, नूई ने भारत को उथल-पुथल से भरा, जबकि चीन को एकरूप देश बताया है। नूई के विचारों ने एक बार फिर उस बहस को सामने ला दिया है, जो वर्षों से समय-समय पर उठती रही है।

सवाल वही है, क्या भारत को चीन जैसा बनना चाहिए? क्या तेज रफ्तार विकास का मतलब केवल ऊंची-ऊंची इमारतें, चौड़ी सड़कें, विशाल कारखाने और बुलेट ट्रेन हैं? या फिर किसी देश की अपनी ताकत उसके नागरिकों की स्वतंत्रता, लोकतांत्रिक संस्थाओं और सामाजिक संतुलन में भी निहित होती है?

यह सच है कि भारत और चीन, दोनों एशिया की बड़ी अर्थव्यवस्थाएं हैं, लेकिन दोनों की विकास यात्रा की बुनियाद बिल्कुल अलग है। भारत का इतिहास, उसकी लोकतांत्रिक परंपरा, सामाजिक विविधता और संवैधानिक व्यवस्था उसे चीन से अलग पहचान देते हैं। इसलिए भारत की तुलना चीन से करना जितना स्वाभाविक है, उतना ही यह समझना भी जरूरी है कि भारत का रास्ता अलग है। शायद यही उसकी सबसे बड़ी ताकत भी है।

यदि इस तुलना को निष्पक्ष दृष्टि से देखें तो चीन का विकास मॉडल जितना आकर्षक दिखाई देता है, उसके पीछे उतनी ही कठोर प्रशासनिक व्यवस्था भी काम करती है। वहां कम्युनिस्ट पार्टी की एकदलीय व्यवस्था है, जहां सरकार का निर्णय अंतिम माना जाता है। बड़े बुनियादी ढांचे के निर्माण से जुड़े फैसले बहुत तेजी से लिए जाते हैं। उन्हें लागू भी कर दिया जाता है, लेकिन इसके साथ यह भी सच है कि वहां नागरिकों को सरकार के निर्णयों का विरोध करने या उन्हें अदालत में चुनौती देने की स्वतंत्रता भारत जैसी नहीं है। यदि किसी परियोजना के लिए हजारों लोगों को विस्थापित करना पड़े तो प्रक्रिया बहुत कम समय में पूरी हो जाती है।

भारत में भूमि अधिग्रहण से लेकर पर्यावरणीय



स्वीकृति और न्यायिक समीक्षा तक कई स्तरों पर प्रक्रिया चलती है। कई बार इससे परियोजनाओं में देरी होती है, लेकिन यही लोकतंत्र की कीमत भी है। यहां एक सामान्य किसान भी अदालत का दरवाजा खटखटा सकता है। सरकार के निर्णय को चुनौती दे सकता है। यही लोकतांत्रिक व्यवस्था नागरिकों के अधिकारों की सबसे बड़ी सुरक्षा है।

यही कारण है कि भारत की विकास यात्रा कई बार धीमी दिखाई देती है, लेकिन उसकी बुनियाद संवाद, सहमति और कानून के शासन पर टिकी होती है। विकास की गति महत्वपूर्ण है, लेकिन उससे भी अधिक महत्वपूर्ण यह है कि विकास की प्रक्रिया न्यायपूर्ण हो और उसमें समाज के सभी वर्गों की भागीदारी सुनिश्चित हो।

फिर, चीन के विकास मॉडल के सामने आज कई नई चुनौतियां भी खड़ी हो गई हैं। दशकों तक चली वन चाइल्ड पॉलिसी के कारण वहां जनसंख्या का संतुलन तेजी से बदल रहा है। कार्यशील आबादी घट रही है। बुजुर्गों की संख्या लगातार बढ़ रही है। इसका असर वहां की अर्थव्यवस्था और श्रम बाजार दोनों पर दिखाई देने लगा है।

चीनी समाज में मानसिक तनाव, अकेलापन और अत्यधिक प्रतिस्पर्धा भी गंभीर चिंता का विषय बन चुके हैं। पिछले कुछ वर्षों में वहां %तांगपिंग% यानी लेंट जाना और बैलान जैसी प्रवृत्तियों की चर्चा दुनिया भर में हुई। इन प्रवृत्तियों के माध्यम से बड़ी

संख्या में युवा अत्यधिक प्रतिस्पर्धी जीवनशैली से दूरी बनाने की बात कर रहे हैं। वे बेहतर जीवन की तलाश में पारंपरिक सफलता की दौड़ से खुद को अलग करना चाहते हैं। यह स्थिति बताती है कि केवल आर्थिक विकास किसी समाज की सभी समस्याओं का समाधान नहीं कर सकता।

भारत की सबसे बड़ी ताकत उसकी

युवा आबादी, मजबूत पारिवारिक व्यवस्था और सामाजिक विविधता है। यहां परिवार आज भी सामाजिक सुरक्षा का सबसे बड़ा आधार है। समाज में संवाद की परंपरा है। असहमति से लिए स्थान है। लोकतांत्रिक संस्थाओं के माध्यम से अपना मत रखने की स्वतंत्रता भी है। यही विशेषताएं भारत को एक अलग विकास मॉडल प्रदान करती हैं। धार्मिक और सांस्कृतिक दृष्टि से देखें तो भारत और चीन के बीच का अंतर और भी स्पष्ट दिखाई देता है।

चीन में धार्मिक गतिविधियों और सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों पर राज्य का गहरा नियंत्रण है। तिब्बत की बौद्ध परंपरा हो या शिंजियांग क्षेत्र में उइघुर मुसलमानों से जुड़े मुद्दे, इन विषयों पर अंतरराष्ट्रीय स्तर पर लगातार चर्चा होती रही है। वहां धार्मिक संस्थाएं भी राज्य की निर्धारित सीमाओं के भीतर ही काम कर सकती हैं।

भारत की तस्वीर इससे बिल्कुल अलग है। यह विविधताओं का देश है, जहां अलग-अलग धर्म, भाषाएं, परंपराएं और जीवन पद्धतियां सदियों से साथ-साथ विकसित हुई हैं। वसुधैव कुटुम्बकम् और सर्वधर्म समभाव जैसे विचार केवल हमारे ग्रंथों तक सीमित नहीं हैं, बल्कि हमारे सामाजिक जीवन का हिस्सा भी हैं।

यहां हर कुछ किलोमीटर पर भाषा बदल जाती है। खान-पान बदल जाता है। लोक परंपराएं बदल जाती हैं, लेकिन यही विविधता भारत की सबसे बड़ी सांस्कृतिक शक्ति बन जाती है। भारत का लोकतंत्र भी केवल चुनाव तक सीमित व्यवस्था नहीं है।



इसी के चलते २२ जून को उन्होंने ऑल इंडिया तृणमूल कांग्रेस के नाम से एक विशेष बैठक बुलाई। इसमें अरूप रॉय को पार्टी का अध्यक्ष घोषित कर दिया और एक बार फिर से कह दिया कि दीदी को अब मार्गदर्शक बन जाना चाहिए। मतलब साफ है कि दीदी अब गद्दी छोड़ दे। जाहिर है ऋाव्रत बनर्जी का यह आत्मविश्वास यूं ही नहीं है। इसके लिए हमें महाराष्ट्र में हुए पिछले घटनाक्रमों को देखना चाहिए।

भारतीय राजनीति में ऐसे उदाहरण कम ही देखने को मिलते हैं जब कोई पार्टी ६ करोड़ ८२ लाख मतदाताओं में से ४१ फीसदी का वोट हासिल करे, अपनी प्रतिद्वंदी भाजपा से सिर्फ ३२ लाख कम वोट (भाजपा को ४६ फीसदी वोट मिले हैं) पाकर सत्ता से बाहर हो जाए लेकिन बैकफुट पर इतनी अधिक दिखे। इस बैकफुट पर होने की मुख्य वजह है जनता का असंतोष और उससे बचने की जद्दोजहद। चुनावी नतीजों के आने के बाद जनता के इस असंतोष से तृणमूल कांग्रेस के नेता इतने हतोत्साहित हो गए हैं कि उन्होंने पाला बदलने में जरा सी भी हिचक नहीं दिखाई।

लोकसभा में विरोध का बिगुल फूंकने वाली वरिष्ठ तृणमूल नेता काकोली घोष दस्तौदार ने अपने सभी इंटरव्यू में सफ लफ्जों में कहा कि तृणमूल कांग्रेस अब पुरानी वाली पार्टी नहीं रही। उन्होंने लगभग २५ साल जिन ममता दीदी का साथ दिया वो अब पहले जैसी नहीं रहें। काकोली भी बंगाल में गर्वनंस के बुरी तरह फेल हो जाने को हार का कारण बता रही हैं। काकोली और ऋाव्रत दोनों एक सी बातें बोल रहे हैं। दोनों ने अपने दल भी अलग बना लिए हैं। ऋाव्रत ने जहां मूल पार्टी पर गिर पड़ा। जब वह तेजस्वी गर्भ पृथ्वी पर आया, तब समस्त धरती उसके प्रकाश से जगमगा उठी। ब्रह्मा जी ने संसार के कल्याण हेतु उस दिव्य बालक को अपने रथ पर स्थापित कर लिया। महर्षि अत्रि के उस तेजस्वी पुत्र का नाम सोम पड़ा। उसे चंद्रमा भी कहते हैं। ब्रह्मा जी के सात मानस पुत्रों, भृगु आदि महर्षियों ने वेद-मंत्रों द्वारा चंद्रमा की स्तुति की, जिससे चंद्रमा का तेज और बढ़ गया। तब ब्रह्मा जी ने उन्हें रथ पर बैठाकर

देकर पार्टी से अलग हो चुके हैं।

विवेचना का विषय यह है कि ४१ प्रतिशत वोट हासिल करने वाली पार्टी को छोड़कर उसके नेता और कार्यकर्ता इस तरह से क्यों भाग रहे हैं। बंगाल से आने वाली ग्राउंड रिपोर्ट्स बता रही हैं कि पूरे प्रदेश में तृणमूल कांग्रेस के दफ्तर खाली पड़े हैं। उनमें ना नेता हैं और ना ही कार्यकर्ता। कई

दफ्तरों में तोड़फोड़ भी की गई है। रातोंरात हजारों तृणमूल कार्यकर्ताओं ने अपने को भाजपा कार्यकर्ता बनाना शुरू कर दिया है, वो नहीं चाहते कि अब उनके ऊपर तृणमूल कांग्रेस के कार्यकर्ता होने का ठप्पा लगा रह जाए। वो जनता के रोष से भी बचना चाहते हैं, वो रोष जो लावे की तरह नीचे धधक रहा था और चुनाव का नतीजा आते ही फूट पड़ा।

पिशी और भाड़पो यानी बुआ-भतीजा। पश्चिम बंगाल की राजनीति में यह ममता बनर्जी और उनके भतीजे अभिषेक बनर्जी के लिए कहा जाता है। इस चुनाव के नतीजों के बाद यह जुमला खूब उछला। अभिषेक बनर्जी और उनकी कार्यशैली पर तो जनता के साथ-साथ उन्हीं की पार्टी के तमाम नेताओं ने भी सवाल उठाए। खुलकर सामने आकर बोलने वालों में कल्याण बनर्जी भी हैं जो अभी तक ममता के ही खेमे में टिके हुए हैं। ज्यादातर नेता अभिषेक की कार्यशैली और उस पर ममता बनर्जी के आंख मूंदने से परेशान दिखे। आम जनता का तो खेर कहना ही क्या। अभिषेक बनर्जी ने अपने कई भाषणों में डीजे बजने की बात कही थी। यह वो विरोधियों पर निशाना साधने के लिए कहते थे। डीजे मतलब डिम (अंड) और जूता। चुनाव हारने के बाद जनता यही डीजे अब उन पर बजा रही है। अभिषेक को बाहर निकलने के लिए हेलमेट पहनना पड़ रहा है। लोकसभा चुनावों में अभिषेक अपनी जिस डायमंड हार्बर सीट भाजपा के अभिजीत दास से रिकार्ड ७ लाख से अधिक वोटों से जीतकर सांसद बने थे उसी सीट के ज्यादातर तृणमूल विधायक उनका साथ छोड़ गए। दूसरी ओर तृणमूल कांग्रेस के कई दूसरे नेता भी डीजे बजने से परेशान हैं। उनके वीडियो वायरल हो रहे हैं। लोग अपने छोटे-छोटे कामों में सरकारी भ्रष्टाचार और कमीशनखोरी से परेशान थे। यह कमीशनखोरी पूरे बंगाल में कट मनी के नाम से कुख्यात है। मूल सुविधाएं अपने सबसे निचले स्तर पर थीं और बांग्लादेश से

अवैध घुसपैठ की वजह से लोगों को अपने सीमित संसाधनों को भी बांटना पड़ रहा था।

टीएमपी शासन का इस तरह से अंत बता रहा है कि पार्टी तब तक ही अपना दम दिखा पा रही थी जब तक वो सत्ता में थी और उससे फायदे लेने वाले उससे जोंक की तरह चिपके हुए थे। सत्ता से जाते ही फायदे लेने वाले भाग गए और जनता खुल कर सामने आ गई। सच्चाई बताने लगी। राजनीतिक पंडितों के सामने भी यह विषय नया है कि कैसे बंगाल में ३४ साल से जमे कम्युनिस्ट शासन को उखाड़ कर फैंकने वाली स्ट्रीट फाइटर ममला बनर्जी अपनी ही बनाई पार्टी से एक तरफ किनारे धकेली जा रही हैं। १ जनवरी १९९८ को कांग्रेस से अलग होकर जब ममता ने अपनी पार्टी तृणमूल कांग्रेस बनाने की घोषणा की थी तब भी उनके लिए यह सोचना आसान नहीं रहा होगा कि ठीक १३ साल बाद २० मई २०११ में वो बंगाल की मुख्यमंत्री बन जाएंगी। वो बर्नी और १५ साल तक बर्नी रहें। लेकिन इतने समय में भी वो पार्टी की एक पुख्ता विचारधारा को बनाने या सामने लाने में विफल रहें। कम्युनिस्टों के पास मशहूर कम्युनिज्म का सिद्धांत था, कांग्रेस अपनी सेक्युलर विचारधारा के साथ आगे बढ़ी। भाजपा अपनी हिन्दुत्व की विचारधारा के साथ मैदान में है। वहीं तृणमूल कांग्रेस के पास कम्युनिस्टों को शासन से हटाने के बाद कोई विचारधारा ही नहीं बचा। उसका कार्यकर्ता किस बात के लिए दम दिखाता। जैसे-जैसे समय बीता शासन का रुतबा ममता की पार्टी पर हावी होता गया और अब जनता का असंतोष बता रहा है कि उस शासन को वो दमनकारी मान रही थी।

क्षेत्रीय पार्टियां अमूमन किसी एक करिश्माई नेता के इर्द-गिर्द घूमती हैं। जब तक नेता रहता है वो पार्टी चलती रहती है। नेता के शिथिल पड़ते ही पार्टी भी शिथिल हो जाती है। उत्तर प्रदेश में ७० वर्ष की मायावती के कमजोर पड़ते ही बहुजन समाजवादी पार्टी का अवसान और तमिलनाडु में जयललिता के बाद हम दिशाहीन हुई अन्नाद्रमुक हो देख ही रहे हैं। ७१ साल की ममता बनर्जी खुद की बनाई हुई पार्टी को अपने हाथ से यूं ही आसानी से जाने देंगी या २० साल पहले वाली दम दिखाते हुए उसे बचाने की जद्दोजहद करेंगी यह आने वाला समय बताएगा। फिलहाल तो ममता दीदी के लिए पनघट की डार बहुत कठिन राह है।

आज का इतिहास

- १९१७ संयुक्त राज्य अमेरिका में लारंस क्लब इंटरनेशनल की स्थापना की गयी
- १९२० आर्थर मेइयेन कनाडा के नौवें प्रधानमंत्री बने।
- १९२८ इसोनोजो की पहली लड़ाई प्रथम विश्व युद्ध के दौरान हुई थी। यह ऑस्ट्रियाई और हंगरी की सेनाओं के बीच लड़ा गया था। इसके परिणामस्वरूप ऑस्ट्रिया और हंगरी की सामरिक जीत हुई।
- १९४१ नाजियों ने यूरोपीय देश लिथुआनिया में पांच हजार यहूदियों को मौत के घाट उतारा।
- १९४४ सायपन की लड़ाई में सबसे बड़ी बेंजार्ड चार्ज का इस्तेमाल जापानी सेना ने अमेरिका के खिलाफ किया था। द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान सायपन की लड़ाई हुई थी। यह युद्ध मारियाना द्वीप पर हुआ था। इस लड़ाई के परिणामस्वरूप दोनों ओर से कई हताहतों के साथ संयुक्त राज्य अमेरिका की जीत हुई।
- १९४६ मद्र फ्रांसेस जेवियर कैन्नरी एक संत के रूप में बेकॉनिनज़ किए गए पहले अमेरिकी बन गए।
- १९६३ दक्षिण वियतनाम के प्रमुख राजनीतिक सलाहकार, नगो दीन्ह नु, के भाई और दक्षिण वियतनाम के प्रमुख राजनीतिक सलाहकार, एनगो दीन्ह दीम ने बौद्ध धर्मगुरुओं के दौरान विरोध प्रदर्शन कर रहे अमेरिकी पत्रकारों के एक समूह पर हमला किया।
- १९७९ सोवियत संघ ने पूर्वी कजाख में परमाणु परीक्षण किया।
- १९८० ईरान में शरिया कानून लागू हुआ।
- १९८३ सोवियत प्रीमियर यूरी एंड्रोपोव को एक पत्र लिखने के बाद, अमेरिकी छात्र समार्था स्मिथ ने सोवियत संघ के आसपासोव के निजी मेहमान का दौरा किया, जिसे अमेरिका के यंगेस्ट एक्सैडर के रूप में जाना जाता है।
- १९८५ बोरिस बेकर समस्त कट उम्र के विंबलडन जीतता बने। उन्होंने १७ साल की उम्र में विंबलडन चैंपियनशिप जीती थी। वह एक जर्मन टेनिस खिलाड़ी थे और कई टेनिस चैंपियनशिप जीत चुके थे। उन्हें अपने समय के दौरान दुनिया में नंबर १ के रूप में भी स्थान दिया गया था। वर्तमान में वह कोचिंग संसार नं। १ नोवाक जोकोविच।
- १९९४ यमन में १९९४ के गृह युद्ध: उत्तरी यमन में सैनिकों ने एडन पर कब्जा कर लिया।
- १९९४ पूर्व उत्तरी यमन के सैनिकों ने एडेन पर कब्जा कर लिया, येमेनी गृह युद्ध को समाप्त कर दिया।
- २००३ नासु के ऑपच्युनिटी अंतरिक्ष यान ने मंगल ग्रह के लिए उड़ान भरी थी।

हिमाचल में 2027 की चुनावी बिसात : गुटबाजी के बीच सुक्खू सरकार की बढी बेचैनी

आदिति फडणीस

हिमाचल प्रदेश में विधान सभा चुनाव नवंबर 2027 में होने हैं लेकिन उसकी बेचैनी पहले ही महसूस की जा सकती है। धर्मशाला के एक स्थानीय पत्रकार कहते हैं, ‘ अगर नेतृत्व में बदलाव होता है तो कांग्रेस दो अंकों में पहुंच सकती है वरना तो अगर वह 10 सीटें भी हासिल कर ले तो खुशकिस्मती होगी। ’

हिमाचल विधान सभा में 68 सीटें हैं। वर्ष 2022 के चुनाव में कांग्रेस को 40 सीटें मिली थीं और वह सुखचिंदर सिंह सुक्खू के नेतृत्व में सरकार बनाने में कामयाब रही। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) को 25 सीटें मिली थीं। चुनाव में तीन निर्दलीय उम्मीदवार भी जीते थे।

2024 में थोड़े समय के लिए कांग्रेस सरकार लड़खड़ाई थी जब नौ विधायकों (छह कांग्रेसी और तीन निर्दलीय) ने फरवरी 2024 में राज्य सभा चुनाव में भाजपा द्वारा नामित प्रत्याशी हर्ष महाजन के पक्ष में मतदान किया था। कांग्रेस के वागियों को अयोग्य घोषित कर दिया गया जबकि स्वतंत्र विधायकों ने खुद इस्तीफा दे दिया। जब उपचुनाव हुए तो इन नौ में से छह विधायक हार गए। कांग्रेस वापस

अपने 40 के आंकड़े पर पहुंच गई लेकिन खस्ता हालत में क्योंकि पार्टी राज्य में चारों लोक सभा सीट हार गई थी।

पहले से ही गंभीर वित्तीय संकट से जूझ रही राज्य सरकार को इतिहास में पहली बार अपना बजट (2026–27 का बजट जो मार्च 2026 में पेश किया गया) 3500 करोड़ रुपये से अधिक कम करना पड़ा। हालांकि बजट में घोषित मितव्ययिता उपाय (मुख्यमंत्री, विधायकों और कुछ सरकारी कर्मचारियों के वेतन स्थगित करना) केवल दिखावा भर थे और नकदी की कमी के बावजूद सरकार ने कम आय वाले परिवारों की महिलाओं के लिए 1500 रुपये प्रति माह की सहायता की घोषणा की। परंतु बजट में महत्वपूर्ण क्षेत्रों में व्यय में कमी देखने को मिली।

मसलन सामाजिक कल्याण और पोषण के लिए आवंटन में 56 फीसदी की कटौती की गई। मुख्यमंत्री सुक्खू ने इसे केंद्र द्वारा राजस्व घाटा अनुदान वापस लेने से जोड़ा और चेतावनी दी कि भविष्य में राज्य को हर साल 8,000 करोड़ रुपये तक का नुकसान हो सकता है।



हिमाचल प्रदेश ने कभी बहुत अधिक गरीबी नहीं देखी है लेकिन यह लगातार राजस्व घाटे से जूझता रहा है। प्रदेश में रोजगार की स्थिति निराशाजनक बनी हुई है और सरकार अब भी सबसे बड़ी नियोक्ता है, जिसका असर उसके वेतन, पेंशन और महंगाई भत्ते के बिलों पर पड़ता है। हर सरकार जो सत्ता में आती है उसे उन्हीं उबाऊ वित्तीय दुविधाओं का सामना करना पड़ता है।

चूंकि हिमाचल प्रदेश एक तरह से दो-दलीय राज्य है जहां निर्दलीयों या नई पार्टियों

के लिए बहुत कम जगह है (आम आदमी पार्टी ने कोशिश की थी लेकिन पिछले विधान सभा चुनाव में उसे 1 फीसदी से भी कम वोट मिले) इसलिए आने वाली सरकार को भी उन्हीं वित्तीय समस्याओं का सामना करना होगा चाहे वह किसी भी दल की हो।

क्या नए चेहरे नई सोच ला सकते हैं ? कांग्रेस में सुक्खू के सबसे बड़े प्रतिद्वंद्वी उपमुख्यमंत्री मुकेश अग्निहोत्री हैं। उन्होंने सुक्खू (और अपनी ही) सरकार से कहा है कि उसे अपनी कार्यप्रणाली सुधारनी चाहिए। ऐसी आखिरी चेतावनी छह महीने पहले दी गई थी और उन्होंने अफसरशाहों पर व्यवस्था का दुरुपयोग करने का आरोप लगाया था।

भाजपा सरकार के प्रदर्शन पर तंज कस रही है लेकिन जो लोग इसे चला रहे हैं उन्होंने हिमाचल प्रदेश के हालात सुधारने के लिए बहुत कम समाधान पेश किए हैं। अब भाजपा को एक नया राष्ट्रीय अध्यक्ष मिल चुका है और

केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री जेपी नड्डा अपनी पार्टी की जिम्मेदारियों से मुक्त हैं। उनके पास राज्य और केंद्र दोनों में कई वर्षों का अनुभव है लेकिन उन्होंने वास्तव में राज्य के लिए कोई दृष्टि पेश नहीं की है। जयराम ठाकुर, जो विधान सभा में वर्तमान में विपक्ष के नेता हैं वही भाजपा के लिए एक प्रसिद्ध चेहरा हैं। कुछ अन्य नेता भी आगे आने को आतुर हैं।

चार बार के विधायक विक्रम ठाकुर ने गरीबी में जीवन आरंभ किया। उन्होंने अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद और भारतीय मजदूर संघ के माध्यम से राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के लिए काम किया और एक बार मंत्री बने। वे पचास की वय के मध्य में हैं और कांगड़ा जिले के हैं। इसी जिले से अनुराग ठाकुर भी हैं जो 2024 तक केंद्रीय मंत्री रहे हालांकि लोग वास्तव में जानना चाहते हैं कि वे वर्तमान में मंत्री क्यों नहीं हैं।

इंदु बाला गोस्वामी 2017 में पालमपुर से विधान सभा चुनाव हार गईं। वे राज्य सभा के लिए नामित हुईं लेकिन कुछ सप्ताह पहले उनकी सदस्यता समाप्त होने पर उन्हें दूसरा कार्यकाल नहीं दिया गया। उन्होंने राज्य में

तीजन बाई: जिनके लिए पंडवानी ही बनी जीवन की सबसे बड़ी मुक्ति

सुधीर सक्सेना

तीजन बाई का जन्मगांव इस्पात नगरी भिलाई से करीब ही है। जीरोमाइल से 14 किलोमीटर दूर गलियारी को अब भिलाई में ही मानिए। पिता चुनूक लाल। मां सुखमती। पांच भाई-बहनों में सबसे बड़ी। जाति की पारधी। उस अंत्यज समाज की, जो मूलतः राजपूत समाज से संबद्ध होने के बावजूद जनजातियों में परिगणित है और आखेट तथा पक्षियों को पकड़ने के लिए जानी जाती है। पारधी अब घुमरू जनजाति हैं। वे झाड़ू-चटाई, टोकरी आदि अच्छी बना लेते हैं। विडंबना देखिए कि जब जात-बाहर विवाह के कारण तीजन पारधी-समाज से निष्कासित हुईं, तो यही पेशा गांव के बाहर झोपड़ी बनाकर जीवनयापन में उनके काम आया, मगर यह स्थिति ज्यादा दिन तक नहीं रही। कला ने उन्हें दो जूतों की रोटी दी, नौकरी दी, सम्मान और प्रतिष्ठा दी और उन्हें उस पायदान पर लाकर खड़ा कर दिया, जहां तक पहुंचना विपन्न पारधियों के लिए ख़ाबां से भी दूभर था। तीजन को पंडवानी विरासत में मिली। मातृकुल से। उसके नाना बृजलाल पारधी पंडवानी कहते थे। बालपन में तीजन ने नाना से पंडवानी सुनी और वह उन्हें कंठस्थ हो गई। तेरह की वय में समीपवर्ती गांव चंद्रखुरी में उन्हें पहली बार पंडवानी गायन का मौका मिला। दक्षिणा या चढ़ावे में मिले दस रुपये उनकी पहली कमाई थी। भगवान श्रीकृष्ण में तीजन की अटूट भक्ति थी। जीवन कष्टों से बिंधा था। पहले पति से अलग हुई। दूसरा पति जालिम निकला। वह अक्सर उनकी पिटाई करता था। तीजन ने पीड़ा-प्रताड़ना सही, लेकिन पंडवानी नहीं छोड़ी। पंडवानी में ही उनकी मुक्ति थी, पीड़ा से भी, दैन्य से भी, वर्जनाओं से भी। पंडवानी ही उन्हें स्याह बोगदे के

बाहर उस ठौर ले गई, जहां खुली हवा थी, रोशनी थी और उन्हें सराहती हुई एक बड़ी दुनिया थी। कला कोई भी हो, वह तैयारी या रियाज मांगती है। तीजन ने अपने को तैयार किया, मांजा या परिष्कृत किया और सबसे बढ़कर उसे नवाचारित भी किया। सबलसिंह चौहान की छत्तीसगढ़ी महाभारत कंठस्थ करने के बाद उन्होंने उमेद सिंह देशमुख से विधिवत प्रशिक्षण लिया। पंडवानी पुरुषों के वचस्व का क्षेत्र था। बैठकर वाचन की वेदमती शैली उनके उपयुक्त थी, लेकिन तीजन ने इसकी विलोम कापालिक शैली चुनी। अब देखें, तो लगता है कि तीजन का चयन सही था। कापालिक शैली में खड़े-खड़े ‘महाभारत’ गाई जाती थी। तबला, खड़ताल, ढोलक, मंजीरा, हार्मोनियम जैसे इने-गिने वाद्य। साथ में तंबूरा। तंबूरे से वह कई प्रयोजन साधती थीं। तीजन बालिक को आंगिक अभिनय से निखार देती थीं। माहौल के मुताबिक शब्द चयन में थोड़ा हेरफेर। वह गायन, नृत्य, प्रलाप, वादन, संवाद और अभिनय से अपना ‘डोमेन’ रचतीं और दर्शकों को बांध लेती थीं। तीजन को अनपढ़ को मलाल नहीं था। उनके तई सब प्रभु की माया है। 80 के दशक में उन पर रंगकर्मी हबीब तनवीर की निगाह पड़ी। कला-गुरु को कलासाधिका की प्रतिभा चीन्हेते देर न लगी। वह भारत महोत्सव में गईं। दिल्ली में इंदिरा गांधी के सम्मुख उन्होंने पंडवानी प्रस्तुत की। उन्हें जगह-जगह से न्यूता मिला। दिशाएं गौण हो गईं। वह फ्रांस, जर्मनी, मॉरीशस, तुर्किये, रोमानिया, बांग्लादेश और स्विट्जरलैंड गईं ही, माल्टा, ट्यूनीशिया और साइप्रस भी हो आईं। तीजन ने कहा था-‘ मैं पढ़ी होती, तो शायद पंडवानी गायिका नहीं बनती। बहुत दुख झेले, लेकिन सरस्वती मैया की कृपा कि पंडवानी मेरी जिंदगी हो गई। सब उसी का दिया है।’

बांग्लादेश के सहारे बंगाल की खाड़ी पर लगी चीन की नजर

नीरज कुमार दुवे

दक्षिण एशिया में चीन ने अब भारत की पूर्वी सीमा पर नया सामरिक दांव चल दिया है। पाकिस्तान के रास्ते अरब सागर तक पहुंच बनाने वाले चीन पाकिस्तान आर्थिक गलियारे के बाद अब बीजिंग की नजर बंगाल की खाड़ी पर है। हम आपको बता दें कि चीन ने बांग्लादेश और म्यांमार को जोड़ते हुए एक नए आर्थिक गलियारे का प्रस्ताव रखा है, जो यदि आकार लेता है तो भारत के पूर्वी समुद्री क्षेत्र में शक्ति संतुलन को बदल सकता है। यह केवल व्यापार और परिवहन का मामला नहीं है, बल्कि हिंद महासागर क्षेत्र में चीन की दीर्घकालिक सामरिक घेराबंदी की योजना का अगला चरण माना जा रहा है।

यह प्रस्ताव बांग्लादेश के प्रधानमंत्री तारिक रहमान की हालिया चीन यात्रा के दौरान सामने आया। चीन के राष्ट्रपति शी जिनिपिंग ने इस पहल को खुला समर्थन दिया। योजना के तहत चीन के युवान प्रांत के कुनिमिंग को म्यांमार के रास्ते बांग्लादेश के चट्टोग्राम, काक्स बाजार और मोंगला बंदरगाहों से जोड़ने की बात है। सड़क, रेल, जलमार्ग और बहुस्तरीय परिवहन नेटवर्क के जरिये यह गलियारा चीन को सीधे बंगाल की खाड़ी तक पहुंच दिला सकता है।

चीन के राजतूत याओ वेन ने साफ कहा कि यह पहल किसी एक देश तक सीमित नहीं है और यदि अन्य देश चाहें तो इसमें शामिल हो सकते हैं। यह बयान सीधे भारत की ओर संकेत माना जा रहा है। दरअसल यह वही विचार है जिसे पहले बांग्लादेश, चीन, भारत, म्यांमार आर्थिक गलियारे के रूप में आगे बढ़ाया गया था, लेकिन भारत की आपत्तियों और चीन की बेस्ट एंड रोड परियोजना को लेकर संदेह के कारण वह योजना ठंडे बस्ते में चली गई। अब चीन ने भारत को अलग रखते हुए तीन देशों वाला नया विकल्प सामने रख दिया है।

बांग्लादेश इस परियोजना को आर्थिक अवसर के रूप में पेश कर रहा है। ढाका का दावा है कि इससे व्यापार बढ़ेगा, बंदरगाह आधुनिक होंगे और चीन तथा दक्षिण पूर्व एशिया के बाजारों तक सीधी पहुंच मिलेगी। खास बात यह है कि मोंगला बंदरगाह से सटे जिस आर्थिक क्षेत्र को पहले भारत



समर्थित परियोजना के लिए चिन्हित किया गया था, उसे बांग्लादेश की सरकार ने हटाकर अब चीन समर्थित कंपनी को सौंप दिया है। यह फैसला नई दिल्ली के लिए स्पष्ट रणनीतिक संकेत है कि ढाका अब बीजिंग के ओर करीब जा रहा है।

चीन और बांग्लादेश के बीच केवल व्यापारिक रिश्ते ही नहीं बढ़ रहे, बल्कि रक्षा और कूटनीतिक सहयोग भी तेजी से गहरा रहा है। दोनों देशों ने विदेश और रक्षा मंत्रालयों के बीच 2 प्लस 2 संवाद तंत्र बनाने पर सहमति जताई है। तिस्ता नदी परियोजना, लालमोनिरहाट हवाई अड्डे के विकास, ड्रोन निर्माण संयंत्र और तकनीकी हस्तांतरण जैसे समझौते भारत की सुरक्षा एजेंडियों की चिंता बढ़ा रहे हैं। खासकर भारत की पूर्वी सीमा के नजदीक चीनी उपस्थिति को नई दिल्ली बेहद गंभीरता से देख रही है।

हालांकि इस महत्वाकांक्षी गलियारे के सामने सबसे बड़ी बाधा म्यांमार है। जिस रास्ते से यह परियोजना गुजरनी है, वहां गृहयुद्ध जैसी स्थिति बनी हुई है। रखाइन प्रांत, जहां चीन समर्थित क्वाकफ्यू गहरे समुद्री बंदरगाह की परियोजना चल रही है, वह भीषण संघर्ष की चपेट में है। म्यांमार की सैन्य सत्ता कई रणनीतिक इलाकों पर अपना नियंत्रण खो चुकी है। सुरक्षा हालात इतने खराब हैं कि चीन समर्थित ऊर्जा परियोजनियों को भी हटाना पड़ा है। ऐसे में सड़क और रेल संपर्क का सपना फिलहाल जमीन पर उतरता नहीं दिखता।

देखा जाये तो भारत के लिए इस प्रस्ताव को

हल्के में लेना भारी भूल होगी। चीन की रणनीति साफ है। पश्चिम में पाकिस्तान के जरिये अरब सागर तक पहुंच और पूर्व में म्यांमार तथा बांग्लादेश के जरिये बंगाल की खाड़ी तक पहुंच बनाकर वह भारत को समुद्री और भू रणनीतिक दबाव में लाना चाहता है। यह

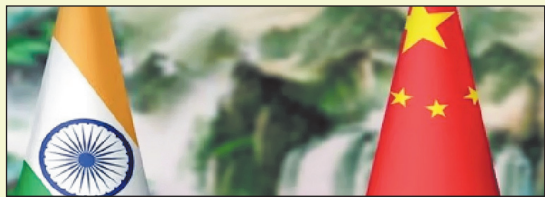
जलडमरूमध्य पर निर्भरता कम करने की चीनी कोशिश का भी हिस्सा मानी जा रही है। यदि चीन को बंगाल की खाड़ी तक निर्बाध पहुंच मिलती है तो हिंद महासागर क्षेत्र में उसकी नौसैनिक सक्रियता और बढ़ सकती है।

रणनीतिक विशेषज्ञ मानते हैं कि यह सिर्फ आर्थिक गलियारा नहीं, बल्कि चीन की समुद्री रेशम मार्ग नीति का विस्तार है। चीन बंदरगाहों, औद्योगिक क्षेत्रों और परिवहन नेटवर्क के जरिये दक्षिण एशिया में स्थायी प्रभाव स्थापित करना चाहता है। पाकिस्तान में ग्वादर बंदरगाह के बाद अब मोंगला, चट्टोग्राम और क्वाकफ्यू जैसे ठिकाने चीन की समुद्री रणनीति के नए स्तंभ बन सकते हैं।

देखा जाये तो नई दिल्ली के सामने चुनौती दोहरी है। एक ओर उसे अपने पूर्वोत्तर और बंगाल की खाड़ी क्षेत्र में रणनीतिक संतुलन बनाए रखना है, दूसरी ओर बांग्लादेश जैसे पड़ोसी देशों के साथ विश्वास और आर्थिक साझेदारी को मजबूत करना है। यदि भारत इस बदलते भू-रणनीतिक परिदृश्य को समय रहते नहीं समझता, तो दक्षिण एशिया में चीन की पकड़ और मजबूत हो सकती है। फिलहाल यह परियोजना प्रस्ताव के स्तर पर है, लेकिन इसका संदेश बेहद स्पष्ट है। चीन दक्षिण एशिया और हिंद महासागर क्षेत्र में अपने प्रभाव का नया नक्शा तैयार कर रहा है, और भारत की पूर्वी सीमा अब उस भू-राजनीतिक मुकाबले का अगला मोर्चा बनने जा रही है।

भूपेन्द्र गुप्ता

2020 के गलवान संघर्ष के बाद भारत ने राष्ट्रीय सुरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए चीनी कंपनियों के प्रति अपनी आर्थिक नीति में महत्वपूर्ण बदलाव किए। सरकारी खरीद, संवेदनशील अवसरचना, दूरसंचार तथा प्रत्यक्ष विदेशी निवेश पर कड़े प्रतिबंध लगाए गए। इन कदमों का उद्देश्य स्पष्ट था—रणनीतिक क्षेत्रों में विदेशी, विशेषकर चीनी, निर्भरता को कम करना और आत्मनिर्भर भारत की दिशा में आगे बढ़ना। इसी पृष्ठभूमि में महत्वपूर्ण बिजली परियोजनाओं के सरकारी टेंडरों में चार चीन-सम्बद्ध कंपनियों को दो वर्ष के लिए विशेष छूट देना स्वाभाविक रूप से अनेक प्रश्न खड़े करता है। यह स्वीकार करना होगा कि छह वर्षों में भी देश अपनी औद्योगिक क्षमता पर्याप्त रूप से विकसित नहीं कर पाया।अन्यथा इस छूट का औचित्य क्या है? बिजली क्षेत्र की तीव्र मांग को देखते हुए उच्च वोल्टेज उपकरणों की उपलब्धता सुनिश्चित करना आवश्यक है। इस तर्क के साथ यह भी पूछना आवश्यक है कि क्या इस स्थिति के लिए भारतीय उद्योग को तैयार करने का पर्याप्त प्रयास किया गया? क्या सार्वजनिक क्षेत्र की अग्रणी कंपनी नवीचईएल तथा निजी भारतीय कंपनियों को दीर्घकालिक ऑर्डर, अनुसंधान सहায়ता और तकनीकी उन्नयन के अवसर उसी स्तर पर दिए गए, जिस स्तर पर आत्मनिर्भरता के दावे किए गए? आत्मनिर्भरता केवल नारा नहीं होती; वह सरकारी खरीद नीति से निर्मित होती है। यदि बड़े सरकारी ऑर्डर लगातार विदेशी कंपनियों को मिलेंगे, तो भारतीय कंपनियाँ उत्पादन क्षमता कैसे बढ़ाएँगी? किसी भी उद्योग में निवेश तभी होता है जब भविष्य में स्थिर मांग का भरोसा हो। विदेशी कंपनियों को अपवादस्वरूप प्रवेश दे दिया जाएगा, तो घरेलू उद्योग का विस्तार स्वाभाविक रूप से कमजोर होगा। भारत में ऐसी क्षमता केवल सार्वजनिक क्षेत्र तक सीमित नहीं है।बीएचईएल के अतिरिक्त सीजी पावर एंड इंस्ट्रियल सलूशन्स,हिटेची इनर्जी इंडिया, जीई वरनोवा टीएण्डडी, सीमेस इनर्जी इंडिया, टीडी पावर सिस्टम, वोल्ट एम्प ट्रांसफार्मर, ट्रांसफार्मर एंड रेक्टिफायर (इंडिया)जैसी कंपनियाँ उच्च क्षमता के ट्रांसफार्मर, गैस इंसुलेटेड स्विचगियर, सर्किट ब्रेकर, सबस्टेशन उपकरण और अन्य ट्रांसमिशन उपकरणों के निर्माण का अनुभव रखती हैं। यदि इन कंपनियों को समयबद्ध दीर्घकालिक सरकारी ऑर्डर, अनुसंधान एवं विकास के लिए वित्तीय सहायता, प्रौद्योगिकी उन्नयन तथा विनिर्माण क्षमता कहीं बढ़ा हिस्सा पूरा कर सकती हैं। प्रश्न यह है कि जब भारत में ऐसी औद्योगिक क्षमता मौजूद है, तो उसे और मजबूत बनाने के बजाय विदेशी कंपनियों को अपवादस्वरूप अवसर देने की



आवश्यकता क्यों पड़ी? यह विषय केवल अर्थशास्त्र का नहीं, बल्कि राष्ट्रीय सुरक्षा का भी है। बिजली ट्रांसमिशन नेटवर्क किसी भी आधुनिक राष्ट्र की रणनीतिक परिसंपत्ति है। ऐसे क्षेत्र में विदेशी कंपनियों, विशेषकर उस देश की कंपनियों पर निर्भरता, जिसके साथ सीमा विवाद और सुरक्षा संबंधी तनाव बना हुआ है, दीर्घकालिक दृष्टि से सावधानी की मांग करती है। यदि वास्तव में भारत में इन उपकरणों की कमी है, तो सरकार को यह स्पष्ट करना चाहिए कि अगले पाँच वर्षों में इस कमी को समाप्त करने की कार्ययोजना क्या है। कितनी अतिरिक्त उत्पादन क्षमता विकसित की जाएगी? भारतीय कंपनियों को कौन-कौन से प्रोत्साहन दिए जाएँगे? अनुसंधान एवं विकास, प्रौद्योगिकी हस्तांतरण और निर्यात क्षमता बढ़ाने के लिए क्या ठोस कदम उठाए जाएंगे? केवल अस्थायी छूट देना समाधान नहीं है; समाधान घरेलू क्षमता का स्थायी निर्माण है। सरकार ने यह भी कहा है कि यह अनुमति सामान्य नीति परिवर्तन नहीं, बल्कि विशेष परिस्थिति में दिया गया अपवाद है। किंतु इतिहास बताता है कि अपवाद यदि बार-बार दिए जाएँ, तो वे धीरे-धीरे नीति का स्वरूप धारण कर लेते हैं। भारत को यह तय करना होगा कि वह तत्काल सुविधा का मार्ग चुनना चाहता है या दीर्घकालिक औद्योगिक आत्मनिर्भरता का। यदि आत्मनिर्भर भारत केवल भाषणों तक सीमित रह गया और रणनीतिक क्षेत्रों में विदेशी निर्भरता बनी रही, तो यह लक्ष्य अधूरा ही रहेगा। चीनी कंपनियों को दी गई यह छूट केवल चार कंपनियों का प्रश्न नहीं है; यह भारत की औद्योगिक नीति, राष्ट्रीय सुरक्षा और आत्मनिर्भरता की विश्वसनीयता को परीक्षा है। प्रश्न यह है कि भारत अपनी औद्योगिक नीति किस दिशा में ले जाना चाहता है। यदि भारतीय कंपनियों में कम क्षमता है, तो उसे विकसित करने की जिम्मेदारी भी सरकार की है। यदि क्षमता नहीं है, तो छह वर्षों में आत्मनिर्भरता की दिशा में क्या प्रगति हुई—इसका उत्तर भी सरकार को देना चाहिए। आत्मनिर्भरता का अर्थ विदेशी कंपनियों का विरोध नहीं, बल्कि भारतीय उद्योग को प्राथमिकता देना है। सरकार को तय करना होगा कि आत्मनिर्भर भारत एक नीतिगत संकल्प है या आवश्यकता पड़ते ही भुला दिया जाने वाला नारा। क्योंकि रणनीतिक क्षेत्रों में आत्मनिर्भरता का विकल्प कभी भी स्थायी आयात नहीं हो सकता।

गणेश पुराण के अनुसार भगवान गणेश का चूहा पूर्व जन्म में एक गंधर्व था



गणेश पुराण के अनुसार भगवान गणेश का चूहा पूर्व जन्म में एक गंधर्व था जिसका नाम क्रोच था। एक बार देवराज इंद्र की सभा में गलती से क्रोंच का पैर मुनि वामदेव के ऊपर पड़ गया। मुनि वामदेव को लगा कि क्रोंच ने उनके

साथ शरारत की है। इसलिए गुस्से में आकर उन्होंने उसे चूहा बनने का शाप दे दिया। उस शाप के कारण क्रोंच एक चूहा बन चुका था। लेकिन वह विशालकाय था। वह इतना विशाल था कि अपने रास्ते में आने वाली सभी चीजों

को नष्ट कर देता था। ऐसे ही एक बार वह किसी तरह महर्षि पराशर के आश्रम में पहुँच गया। वहाँ पहुँच कर उसने अपनी आदत के अनुसार मिट्टी के सारे पात्र तोड़ दिये। इतना ही नहीं वह वहाँ उत्पात मचाने लगा। उसने आश्रम की वाटिका

उजाड़ डाली और सारे वस्त्रों और ग्रंथों को कुतर दिया। उस समय महर्षि के आश्रम में भगवान गणेश भी आये हुए थे। महर्षि पराशर ने यह बात गणेश जी को बताई। भगवान गणेश ने तब उस मूषक को सबक सिखाने की सोची।

उन्होंने मूषक को पकड़ने के लिये अपना पाश फेंका। पाश मूषक का पीछा करता हुआ पाताल लोक तक पहुँचा। वह पाश मूषक के गले में अटक गया। पाश की पकड़ से मूषक बेहोश हो गया था। मूषक पाश में घिसटता हुआ भगवान गणेश के सम्मुख उपस्थित हुआ। जैसे ही उसे होश आया उसने अपने आप को भगवान गणेश के सम्मुख पाया। बिना देरी किये मूषक ने गणेश जी की आराधना शुरू कर दी और अपने प्राणों की भीख मांगने लगा। गणेश जी मूषक की आराधना से प्रसन्न हो गए और उससे कहा कि, ‘तुमने लोगों को बहुत कष्ट दिया है। मैंने दुष्टों के नाश एवं साधु पुरुषों के कल्याण के लिए ही अवतार लिया है, लेकिन शरणागत की रक्षा भी मेरा परम धर्म है, इसलिए जो वरदान चाहो माँग लो।’

यह सुनकर वह उत्पाती मूषक अहंकार से भर उठा और भगवान गणेश से बोला, ‘मुझे आपसे कुछ नहीं चाहिए, लेकिन यदि आप चाहें तो मुझसे वर की याचना कर सकते हैं।’ मूषक की गर्व भरी वाणी सुनकर गणेश जी मन ही मन मुस्कराये और कहा, ‘यदि तेरा वचन सत्य है तो तू मेरा वाहन बन जा। मूषक ने बिना देरी किये ‘तथास्तु’ कह दिया गणेश जी मुस्कराते हुए तुरंत उस पर सवार हो गए। अब भारी-भरकम गजानन के भार से दब कर मूषक के प्राण संकट में आ गये। तब उसने गजानन से प्रार्थना की कि वे अपना भार उसके वहन करने योग्य बना लें। इस तरह मूषक का गर्व चूर कर गणेश जी ने उसे अपना वाहन बना लिया। यही कारण है कि आज भी लोग अपने घरों में चूहों के उत्पात मचाने पर भगवान गणेश को याद करते हैं।

40 करोड़ वर्ष पुरानी इस गुफा में गणेश जी के बड़े भाई मुरुगन रहते हैं



सांस्कृतिक विविधता वाला देश मलेशिया यूं तो एक मुस्लिम बहुल राष्ट्र है, लेकिन अन्य धर्मों के प्रति यह हमेशा उदार रहा है। यहां मलय, चीनी व भारतीय सभ्यताओं का अद्भुत मिश्रण है। पारंपरिक शैली में बनी मस्जिदें हों या बौद्ध मंदिर सभी पर्यटकों के बीच आकर्षण का प्रमुख केंद्र रहते हैं। ऐसा ही एक दर्शनीय स्थल है बाटु केव्स (बाटु गुफाएं) जो हिंदुओं की आस्था व मान्यताओं का केंद्र है। प्राचीन समय में नजदीक से गुजरने वाली एक नदी सुंगई बातु (पथरीली नदी) के नाम पर ही इन गुफाओं का नाम बाटु केव्स पड़ा। राजधानी कुआलालंपुर से महज 15

किलोमीटर की दूरी पर स्थित चूना पत्थर (लाइमस्टोन) की ये गुफाएं लगभग 40 करोड़ वर्ष पुरानी हैं। इन्हीं में से सबसे बड़ी प्रमुख गुफा में स्थित हैं भगवान मुरुगन (कार्तिकेय जी) यानी भगवान श्री गणेश जी के बड़े भाई का प्राचीन मंदिर। यह मंदिर सतह से करीब 400 फुट की ऊंचाई पर बना 113 वर्ष पुराना है। मंदिर तमिल हिंदुओं का प्रमुख तीर्थस्थल है। भगवान के दर्शन के लिए श्रद्धालु 272 सीढ़ियां चढ़कर गुफा तक पहुंचते हैं। चर्चिंदिर को चारों तरफसे घेरे हुए चूना पत्थर के पहाड़ ऊपर से संकरे होते चले जाते हैं। पहाड़ों की ऊंचाई और चट्टानों के बीच

से जगह पाकर निकल आए पेड़ों की वजह से सूरज की रोशनी मंदिर परिसर तक बहुत ही कम पहुंच पाती है। बारिश के मौसम में पेड़ों से छन कर गिरने वाली बारिश की बूंदें अद्भुत नजारा पेश करती हैं। गुफा पूरी तरह से प्राकृतिक अवस्था में है। हालांकि कृत्रिम प्रकाश द्वारा रोशनी की गई है। मंदिर तक पहुंचने के लिए 1920 तक लकड़ी से बनी सीढ़ियां थी जिन्हें बाद में सीमेंट से पक्का कर दिया गया। ये गुफाएं पर्यटकों के लिए प्रतिदिन खुलती हैं। यहां आने वाले लोग गुफाओं व मंदिर के इतिहास के बारे में यहां लगी अनेक पट्टिकाओं द्वारा जान सकते हैं।

श्रीकृष्ण के वचन...



श्रीमद्भगवद्गीता में हमें जीवनोपदेशक कृष्ण के दर्शन होते हैं। गीता जयंती पर जानें गीता में कृष्ण के कुछ उपयोगी वचन हे अर्जुन। तेरा कर्म करने में ही अधिकार है, उसके फलों में नहीं। इसलिए तू कर्मों के फल का हेतु न बन तथा तेरी कर्म न करने में भी आसक्ति न हो। विषयों का चिंतन करते रहने से मनुष्य के मन में उनके प्रति आसक्ति पैदा होती है, जो चाह को जन्म देती है। इससे क्रोध उत्पन्न होता है। क्रोध से चित्त में मोह उत्पन्न होता है, मोह से स्मृति-विभ्रम पैदा हो जाता है। स्मृति के लोप से उचित-अनुचित का विचार करने वाली बुद्धि नष्ट हो जाती है और बुद्धि के नाश से स्वयं मनुष्य का ही नाश हो जाता है। जो मूढ़बुद्धि ईद्रियों को हठपूर्वक रोक कर मन से उनका चिंतन करता है, वह मिथ्याचारी है। जो ईद्रियों को मन से संयत कर निरासक होता है, वही कर्मयोग का आचरण श्रेष्ठ है। जो सब भावों में द्वेष भाव से रहित, स्वार्थ रहित, सबका प्रेमी और हेतु रहित दयालु है तथा ममता व अहंकार से रहित सुख-दुख में समान और क्षमावान है, निरंतर संतुष्ट है, मन सहित शरीर को वश में किए है और दृढ़ निश्चय वाला है, वह भक्त मुझको प्रिय है। मन की प्रसन्नता, शांत भाव, भगवत चिंतन का स्वभाव, मन का निग्रह और अंतःकरण के भावों की पवित्रता मन संबंधी तप कहे जाते हैं।

हनुमान ने नहीं, देवी के इस श्राप ने किया था लंका को भस्म

लंका स्वर्ण से बनी नगरी थी। इस बनाने का आदेश भगवान शिव ने विश्वकर्मा को दिया था। लेकिन ऐसा क्या हुआ था जिससे भगवान शिव को लंका नगरी बनाने के लिए मजबूर होना पड़ा था। एक बार भगवान विष्णु और माता लक्ष्मी भ्रमण के लिए कैलाश पर्वत पहुँचे। दोनों को आता देख भगवान शिव विहल हो उठे। उन्होंने अपने कमर पर लिपटे गजचर्म को अपने सर्प से कौपीन (कमरबंद) की भाँति लपेट लिया। नजदीक आते ही भगवान शिव ने विष्णु को गले से लगा लिया। परंतु गरुड़ को देखकर शिव-सर्प संकुचित हो गया जिससे उनकी कौपीन खिसक कर गिर गई। भगवान शिव को नग्न अवस्था में देख लक्ष्मी और पार्वती बड़ी लज्जित हुईं और सिर झुकाकर खड़ी हो गईं। स्थिति सामान्य होते ही शिव विष्णु से और लक्ष्मी पार्वती से बातें करने लगी। उस दौरान लक्ष्मी शीत से ठिठुर रही थी। जब उनसे न रहा गया तो उन्होंने पार्वती से कहा कि आप राजकुमारी होते हुए भी इस हिम-पर्वत पर इतने ठंड में कैसे रह रहीं हैं। कुछ दिन बीतने के बाद भगवान विष्णु और माता लक्ष्मी के निर्मंत्रण पर भगवान शिव और पार्वती बैकुण्ठ गए। वहाँ मोतियों की माला और अन्य वैभव देख पार्वती चकित हुए बिना न रह सकी। बातचीत के दौरान लक्ष्मी जी ने कैलाश पर शीत से ठिठुरने वाली घटना का जिक्र कर दिया। लक्ष्मी की

बात को व्यंग्य समझ माता पार्वती आहत हो गई और भगवान शिव से अपने लिए भी घर बनाने की जिद करने लगी। उसके पश्चात शिव ने विश्वकर्मा को सुवर्ण जडित दिव्य भवन निर्मित करने को कहा। विश्वकर्मा ने शीघ्र ही लंका नगर की रचना की जो शुद्ध सोने से बनी थी। पार्वती के निवेदन पर उस नगर का प्रतिष्ठा

महोत्सव मनाया गया जिसमें समस्त देवी देवताओं को बुलाया गया। विश्रवा नामक महर्षि ने उस नगर की वास्तुप्रतिष्ठा की। पार्वती ने लक्ष्मी को अपना भवन विशेष चाव से दिखाया। लेकिन जब भगवान शिव ने महर्षि विश्रवा से

दक्षिणा माँगने को कहा तो उन्होंने वो नगरी ही माँग ली। शिव ने तत्काल ही स्वर्णनगरी उन्हें दक्षिणा में दे दी। इससे पार्वती बड़ी क्रोधित हुई और उन्होंने विश्रवा को श्राप देते हुए कहा कि तेरी यह नगरी भस्म हो जाए। पार्वती के श्राप के कारण ही रावण द्वारा रक्षित वह लंका हनुमान ने फूँक डाली थी।



क्यों चुना गया कुरुक्षेत्र की भूमि को महाभारत युद्ध के लिए

माना जाता है कि स्थान और परिवेश के अनुसार व्यक्ति की मनोस्थिति बनती और बिगड़ती है। हम सभी जानते हैं कि महाभारत में धर्म और अधर्म की लड़ाई कुरुक्षेत्र में लड़ी गई, पर क्या आपको पता है कि इस लड़ाई के लिए कुरुक्षेत्र की भूमि को क्यों चुना गया महाभारत के युद्ध के लिए कुरुक्षेत्र के मैदान को चुने जाने का निर्णय भगवान श्री कृष्ण जी का था। भगवान



श्रीकृष्ण के इस निर्णय को पीछे एक अद्भुत कहानी है। जब महाभारत के युद्ध को टालना मुश्किल हो गया तब भगवान श्री कृष्ण के ऊपर युद्ध के लिए भूमि का चुनाव करने का जिम्मा आ गया। श्रीकृष्ण एक ऐसी युद्ध भूमि चाहते थे जिसका इतिहास बहुत ही भयभीत और कठोर रहा हो। भगवान श्रीकृष्ण को भय इस बात के लिए था कि कहीं युद्ध भूमि में कौरव और पांडव एक दूसरे को मरते देखकर कहीं सन्धि न कर बैठें इसलिए ऐसी भूमि युद्ध के लिए चुननी चाहिए, जहाँ क्रोध और द्वेष का इतिहास रहा हो। श्री कृष्ण जानते थे यह युद्ध धर्म के लिए लड़ा जा रहा है जहाँ दोनों ओर अपने ही

परिवार के लोग होंगे। यह युद्ध भाई-भाइयों, गुरु-शिष्य, सम्बन्धी-कुटुम्बियों के बीच का है इसलिए श्रीकृष्ण का विचार था कि योद्धाओं के मन में एक-दूसरे के प्रति कठोरता का भाव शिखर पर हो। इस विचार से श्रीकृष्ण जी ने अनेक दूतों को विभिन्न दिशाओं में भेजा ताकि वह युद्ध के लिए भयभीत और कठोर भूमि का पता लगा सकें।

वापस आने के बाद एक दूत ने सुनाया कि- एक स्थान है जहाँ बड़े भाई ने छोटे भाई को खेत की मेंड से बहते हुए मेघ के पानी को रोकने के लिए कहा। छोटे भाई ने बड़े भाई से एतराज जताया और उलाहना देते हुए कहा कि- आप ही क्यों नहीं बंद कर देते हैं। मैं आपका गुलाम नहीं हूँ। यह सुन बड़े भाई क्रोधित हुए। आवेश में

आकर बड़े भाई ने छोटे भाई को छुरे से मार दिया। बड़े भाई ने करूरता की सारी हृदे पार कर अपने छोटे भाई की लाश को घसीटते हुए उस मेंड के पास ले गए, और उस लाश को पैर से कुचलकर बहते पानी को रोक दिया। यह सुनकर श्रीकृष्ण ने निश्चय किया कि यह भूमि भाई-भाई के युद्ध के लिए सबसे उपयुक्त स्थान है।

इस स्थान का इतिहास योद्धाओं के मस्तिष्क पर हावी हो जायगा। यह स्थान कोई और नहीं कुरुक्षेत्र ही था। यही वह स्थान था जहाँ बड़े-बड़े सूर-वीरों का अंत होना था। महाभारत की इस कथा से स्पष्ट होता है कि शुभ और अशुभ विचारों एवं कर्मों के संस्कार भूमि या स्थान में देर तक समाये रहते हैं।

कौन से पक्षी को क्या व क्यों खिलाए जिससे हमें धन; वैभव प्राप्त हो

ऋषि-मुनि, संत-महात्मा सही कह गए हैं कि पशु-पक्षियों को दाना-पानी खिलाने से मनुष्य के जीवन में आने वाली कई परेशानियों से छुटकारा आसानी से मिल जाता है। एक ओर जहाँ हम प्रभु की भक्ति के कृपा पात्र बनते हैं वहीं हमें अच्छे स्वास्थ्य के साथ ही पुण्य-लाभ भी प्राप्त होता है। साथ ही यह पर्यावरण के लिए जरूरी है। अगर आपके मन में भी दिनभर बेचैनी रहती है। आपके काम ठीक समय पर पूरे नहीं हो

रहे हैं। पारिवारिक क्लेश नियमित रूप से चलता रहता है। स्वास्थ्य ठीक नहीं है आदि तो निश्चित ही आपको पक्षियों को दाना खिलाने से आनंद की प्राप्ति होगी और कष्ट दूर हो जाएंगे। चींटें, चिड़ियों, गिलहरियां, कबूतर, तोता, कौआ और अन्य पक्षियों के झुंड और गाय, कुत्तों को नियमित दाना-पानी देने से आपको मानसिक शांति प्राप्त होगी।

परिंदों की भूख मिटाएं, ग्रह पीड़ा हटाएं-कुंडली में यदि राहु-केतु की महादशा हो तो पशु-पक्षियों को बाजरा डालना चाहिए।

पशु-पक्षियों को ज्वार खिलाने से शुक्र ग्रह की पीड़ा दूर होती है। गेहूं खिलाने से सूर्य की पीड़ा दूर होती है। चावल से मानसिक परेशानियां दूर होकर मानसिक शांति मिलती है। मूंग की दाल से बुध ग्रह से होने वाली परेशानियों से निजात पाई जा सकती है।

चने की दाल से गुरु की कृपा प्राप्त होती है। कौओं और कुत्तों को ग्रास देने से शनि, राहु और केतु प्रसन्न होते हैं। गिलहरियों को बाजरा, बिरिस्कट, रोटी खिलाने से जीवन में आने वाली हर कठिनाई से आसानी मुक्ति मिल जाती है।

चिराग का दलित वोट पर दांव

लखनऊ। उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव से पहले लोक जनशक्ति पार्टी-रामविलास ने राज्य में संगठन विस्तार की तैयारी तेज कर दी है. चिराग ने लखनऊ में कहा कि यूपी में दलित और वंचित वर्ग की मजबूत राजनीतिक आवाज बनने का लक्ष्य है.लोक जनशक्ति पार्टी-रामविलास उत्तर प्रदेश में अगले साल की शुरुआत में होने वाले विधानसभा चुनाव को लेकर अपना संगठन मजबूत करने के लिए तेजी से काम कर रही है. लखनऊ में पत्रकारों से बातचीत करते हुए एलजेपीआर प्रमुख चिराग पासवान ने कहा कि पार्टी संस्थापक और उनके पिता रामविलास पासवान की जयंती इस बार उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ में मनाई जाएगी. उन्होंने कहा, %पहली बार हम रामविलास पासवान जी की जयंती उत्तर प्रदेश में मना रहे हैं. इस कार्यक्रम के जरिए संगठन में नई ऊर्जा भरने और यूपी में पार्टी को मजबूत करने का लक्ष्य है. चिराग पासवान ने कहा कि पार्टी बिहार में मजबूत स्थिति में है और झारखंड व नागालैंड में भी उसके विधायक हैं, जबकि पूर्वोत्तर के कई राज्यों में संगठन का विस्तार किया जा रहा है.।

विपक्ष का आरोप: हॉर्स-ट्रेडिंग कर रहे सीएम विजय!



तमिलनाडु। तमिलनाडु में विपक्षी दलों डीएमके, एआईएडीएमकेऔर बीजेपी ने विजय के नेतृत्व वाली टीवीके सरकार पर विधायकों की खरीद-फरोख्त, पुलिस मशीनरी के दुरुपयोग और कैबिनेट बैठकों में अधिकृत व्यक्तियों के दखल देने का आरोप लगाया है. इस संबंध में विपक्षी नेताओं ने शनिवार को चेन्नई स्थित राजभवन में राज्यपाल राजेंद्र विश्वनाथ अलैंकर से अलग-अलग मुलाकात की और उन्हें ज्ञापन सौंपा है. छ्त्स की ओर से संगठन महासचिव आरएस भारती के नेतृत्व में एक प्रतिनिधिमंडल आरोप लगाया गया कि सरकार के निर्देश पर पुलिस मशीनरी का दुरुपयोग कर विधायकों को तोड़ने, धमकाने और प्रलोभन देने की कोशिश की जा रही है।

गैंगस्टर गोल्डी दिल्ली स्पेन में अरेस्ट, 10 लाख का था इनाम

नई दिल्ली। पंजाब एंटी-गैंगस्टर टास्क फोर्स से मिली जानकारी के आधार पर स्पेनिश सुरक्षा एजेंसियों ने वाटेंड गैंगस्टर गुपरुप्ति सिंह उर्फ गोल्डी दिल्ली को गिरफ्तार कर लिया है. पुलिस सूत्रों के अनुसार, गोल्डी दिल्ली को जल्द ही भारत प्रत्यर्पित कर दिया जाएगा. पुलिस सूत्रों ने बताया कि पंजाब एंटी-गैंगस्टर टास्कर फोर्स की सूचना के आधार पर स्पेनिश सुरक्षा एजेंसियों ने वाटेंड गैंगस्टर गोल्डी दिल्ली को गिरफ्तार कर लिया है और जल्द ही उसे भारत लाया जाएगा. 13 जून को दिनदहाड़े दो मास्कड हमलावरों ने फार्मेंसी के कैशियर जनकी दास को गोली मारकर हत्या कर दी थी. इस मामले में पहले भी कई गिरफ्तारियां हो चुकी हैं. पुलिस के अनुसार, गोल्डी दिल्ली हत्या, डकैती, हत्या की कोशिश, अपहरण, दंगा, जबरन वसूली और अवैध हथियार सप्लाई जैसे कई गंभीर अपराधों में शामिल रहा है. वह 2022 में भारत से फरार होकर जर्मनी चला गया था।

ओटीटी से हटाई गई सतलुज

नई दिल्ली।मानवाधिकार कार्यकर्ता जसवंत सिंह खालड़ा के जीवन पर आधारित अभिनेता दिलजीत दोसांझ की फिल्म सतलुज एक बार फिर विवादों में आ गई है. लंबे इंतजार और कई अड़चनों के बाद हाल ही में बिना किसी प्रचार के ओटीटी प्लेटफॉर्म जी5 पर रिलीज हुई इस फिल्म को भारत में अगले आदेश तक हटा दिया गया है. बताया जा रहा है कि फिल्म पहले पंजाब 95 नाम से बनाई गई थी, जिसे बाद में बदलकर सतलुज कर दिया गया. सेंसर से जुड़े विवादों के कारण यह फिल्म लंबे समय तक रिलीज नहीं हो सकी थी. यह फिल्म पिछले काफी समय से अपनी कहानी और विषयवस्तु को लेकर सेंसर बोर्ड के निशाने पर रही है. सेंसर बोर्ड ने इस फिल्म पर कई गंभीर आपत्तियां जताई थीं और कथित तौर पर फिल्म को हरी झंडी देने के लिए इसमें 120 से भी ज्यादा कट लगाने का निर्देश दिया था. यही वजह रही कि तमाम कोशिशों के बावजूद यह फिल्म भारत के सिनेमाघरों में कभी रिलीज ही नहीं हो पाई. आखिरकार, मेकर्स ने इसका नाम बदलकर सतलुज किया।

बद्रीनाथ धाम में चढ़ावा विवाद की जांच शुरू

नईदिल्ली। अयोध्या राम मंदिर में चढ़ावे को लेकर चल रहे विवाद के बीच अब बद्रीनाथ धाम में भी दान और चढ़ावे के प्रबंधन को लेकर उठे सवालों की जांच शुरू हो गई है. सोशल मीडिया पर कथित अनियमितताओं के आरोप सामने आने के बाद बद्रीनाथ-केदारनाथ मंदिर समिति ने मामले की जांच के लिए चार सदस्यीय समिति गठित की है.बीकेटीसी के मुख्य कार्याधिकारी सोहन रांगड ने बताया कि समिति के अध्यक्ष हेमंत द्विवेदी के निर्देश पर जांच पैनल बनाया गया है. समिति को सात दिन के भीतर अपनी रिपोर्ट सौंपने के लिए कहा गया है. उन्होंने बताया कि जांच के दौरान मंदिर परिसर के सीसीटीवी फुटेज, संबंधित कर्मचारियों के बयान और उपलब्ध अन्य साक्ष्यों की पड़ताल की जाएगी. रांगड ने कहा कि 2 जुलाई से सोशल मीडिया पर वायरल हो रहे आरोपों को गंभीरता से लेते हुए निष्पक्ष जांच के निर्देश दिए गए हैं.शुरुआती स्तर पर मंदिर परिसर के सीसीटीवी फुटेज की जांच की गई, लेकिन वीडियो पूरी तरह स्पष्ट नहीं थे. इसके बाद मामले की गंभीरता को देखते हुए क़ाअ़्त्र अध्यक्ष को तुरंत जानकारी दी गई।

कहा- इस यात्रा से भारत की एक्ट ईस्ट पॉलिसी और मजबूत होगी पीएम मोदी इंडोनेशिया, ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड के दौरे पर रवाना हुए

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी सोमवार को इंडोनेशिया, ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड के तीन देशों के दौरे पर रवाना हुए। उन्होंने कहा कि इस दौरे से भारत की एक्ट ईस्ट पॉलिसी, महासागर विजन और एक आजाद, खुले और सबको साथ लेकर चलने वाले इंडो-पैसिफिक के प्रति उसके कमिटमेंट को और मजबूती मिलेगी।

पीएम मोदी 6-8 जुलाई तक इंडोनेशिया, 8-10 जुलाई तक ऑस्ट्रेलिया और 10-11 जुलाई तक न्यूजीलैंड का दौरा करेंगे। इस दौरे का मकसद आपसी रिश्तों को और मजबूत करना है। पीएम मोदी ने रवाना होते समय एक बयान में कहा, पूर्वी और दक्षिणी हिंद महासागर में क्रमशः इंडोनेशिया और ऑस्ट्रेलिया, और उसके बाद न्यूजीलैंड का मेरा दौरा भारत की एक्ट ईस्ट पॉलिसी, महासागर विजन के साथ-साथ एक आजाद और खुले इंडो-पैसिफिक के प्रति हमारे नजरिए को और मजबूत करेगा।

महासागर, या क्षेत्रों में सुरक्षा के लिए आपसी और समग्र तरक्की, सभी क्षेत्रों के लिए सुरक्षा और विकास का भारत का विजन है। इंडोनेशिया के राष्ट्रपति प्रबोवो सुबियांटो के बुलावे पर, पीएम मोदी ने कहा कि वह 6-8 जुलाई तक इंडोनेशिया का दौरा करेंगे। उन्होंने कहा, 2018 में इंडोनेशिया की मेरी पहली यात्रा के दौरान भारत और इंडोनेशिया ने आपसी संबंधों को एक कॉम्प्रिहेंसिव स्ट्रेटैजिक पार्टनरशिप तक



बढ़ाया।

प्रधानमंत्री ने कहा कि आपसी संबंधों को बढ़ावा मिलने के बाद यह उनकी पहली द्विपक्षीय यात्रा होगी। यह जनवरी 2025 में गणतंत्र दिवस समारोह में मुख्य अतिथि के तौर पर राष्ट्रपति प्रबोवो की भारत की राजकीय यात्रा के बाद हो रही है। उन्होंने कहा, भारत और इंडोनेशिया के बीच मजबूत सभ्यतागत और लोगों के बीच संबंध हैं, और मेरी यात्रा हमारी बहुआयामी साझेदारी के सभी पहलुओं को और गहरा करेगी।

इस यात्रा के बारे में पीएम मोदी ने कहा कि वह इंडोनेशिया में भारतीय प्रवासियों से भी बातचीत करेंगे और राष्ट्रपति प्रबोवो के साथ योग्याकार्ता में प्रभुबान्न मंदिर परिसर का दौरा करेंगे, जो दोनों देशों के बीच घनिष्ठ सांस्कृतिक संबंधों का एक और उल्लेखनीय प्रमाण है।

इंडोनेशिया से पीएम मोदी ऑस्ट्रेलिया के प्रधानमंत्री एंथनी अल्बनीज के बुलावे पर मेलबर्न जाएंगे। उन्होंने कहा, मेरा दौरा हमारी कॉम्प्रिहेंसिव स्ट्रेटैजिक पार्टनरशिप को मजबूत करेगा, और मैं पीएम अल्बनीज के साथ अपनी बातचीत में, डिफेंस

और सिव्कोरिटी, ट्रेड और इन्वेस्टमेंट, एजुकेशन और मोबिलिटी और लोगों के बीच संबंधों के एरिया में हमारे रिश्तों को आगे बढ़ाऊंगा। पीएम मोदी ने कहा कि मेलबर्न में वह भारतीय समुदाय से बातचीत करेंगे, जो स्ट्रेटैजिक पार्टनरशिप का एक जरूरी पिलर है। उन्होंने कहा, इसके अलावा, यह दौरा भारत और ऑस्ट्रेलिया को उभरती और जरूरी टेक्नोलॉजी, स्पोर्ट्स और स्पोर्ट्स साइंस के एरिया में अपने द्विपक्षीय रिश्तों को और गहरा करने का मौका भी देगा।

न्यूजीलैंड के प्रधानमंत्री क्रिस्टोफर लक्सन के बुलावे पर दौरे के आखिरी हिस्से में वह ऑकलैंड जाएंगे। उन्होंने कहा, मेरा दौरा मार्च 2025 में प्रधानमंत्री लक्सन के भारत दौरे के बाद हमारे द्विपक्षीय संबंधों में आई मजबूत रफ्तार को और मजबूत करेगा। पीएम मोदी ने कहा कि वह लक्सन के साथ इस बारे में चर्चा करेंगे कि आर्थिक, व्यापार और कर्मशैयल रिश्तों को और कैसे बढ़ाया जाए। उन्होंने कहा कि भारत और न्यूजीलैंड ने फ्री ट्रेड एग्रीमेंट पर साइन करने के आपसी व्यापार और कर्मशैयल रिश्तों को मजबूत करने का वादा किया है। उन्होंने कहा, हमारे आपसी रिश्तों में भारतीय समुदाय का अहम योगदान रहा है, और इस दौरे के दौरान, मैं भारतीय समुदाय के एक बड़े समूह को संबोधित करने का इंतज़ार कर रहा हूँ, जिन्होंने जिंदगी के हर क्षेत्र में बेहतरीन काम किया है।

नेतन्याहू के भारत समर्थन वाले बयान पर सरकार पर बरसी कांग्रेस

■ कहा- विश्वगृह की चुप्पी अस्वीकार्य



नई दिल्ली। इस्राइल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू की तरफ से भारत के समर्थन का दावा किए जाने के बाद कांग्रेस ने प्रधानमंत्री मोदी और केंद्र सरकार पर तीखा हमला बोला है। कांग्रेस महासचिव जयराम रमेश ने सोमवार को कहा कि इस्राइल की सैन्य कार्रवाइयों पर प्रधानमंत्री मोदी की चुप्पी भारत की सभ्यतागत परंपराओं और मूल्यों के खिलाफ है। जयराम रमेश ने सोशल मीडिया पर जारी बयान में कहा कि नेतन्याहू का यह कहना गलत है कि भारत इस्राइल के साथ खड़ा है। उन्होंने कहा कि भले ही प्रधानमंत्री मोदी इस्राइल के प्रति झुकाव रखते हों, लेकिन करोड़ों भारतीय गाजा में हो रही हिंसा, फलस्तीनियों के विस्थापन, ईरान पर हमलों और दक्षिणी लेबनान में इस्राइली सैन्य अभियान की निंदा करते हैं। उनके अनुसार, ये सभी घटनाएं मानवता पर हमला हैं।

उन्होंने यह भी कहा कि नेतन्याहू से समर्थन या प्रशंसा मिलना कोई सम्मान की बात नहीं है। रमेश ने दावा किया कि खुद नेतन्याहू अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अलग-थलग पड़ चुके हैं और उनके प्रति अमेरिका में भी नाराजगी देखी जा रही है। दरअसल, अमेरिकी समाचार चैनल को दिए एक साक्षात्कार में नेतन्याहू ने कहा कि इस्राइल को केवल अमेरिका का ही नहीं, बल्कि भारत जैसे अन्य देशों का भी समर्थन प्राप्त है। उन्होंने कहा कि भारत एक छोटा देश नहीं, बल्कि 1.4 अरब आबादी वाला देश है और वहां से उन्हें जबरदस्त समर्थन मिलता है। उन्होंने यह भी कहा कि सोशल मीडिया, खासकर फेसबुक पर उन्हें भारत से बड़ी संख्या में समर्थन संदेश मिलते हैं।

नेतन्याहू का यह बयान अमेरिकी उपराष्ट्रपति जेडी वेंस की हालिया टिप्पणी के जवाब में आया। पिछले महीने वेंस ने कहा था कि यदि इस्राइल अमेरिकी नीतियों की आलोचना करता है, तो उसे यह नहीं भूलना चाहिए कि अमेरिका उसका सबसे शक्तिशाली सहयोगी है। इसी टिप्पणी का जवाब देते हुए नेतन्याहू ने भारत सहित अन्य देशों के समर्थन का जिक्र किया। इस पूरे घटनाक्रम के बाद कांग्रेस ने केंद्र सरकार की विदेश नीति और प्रधानमंत्री मोदी के रुख पर सवाल उठाए हैं। हालांकि, सरकार की ओर से कांग्रेस के आरोपों पर तत्काल कोई आधिकारिक प्रतिक्रिया सामने नहीं आई है।

जल्द मिल सकती है पेट्रोल डीजल की कीमतों में राहत

नईदिल्ली। अंतरराष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल की कीमतों में आई बड़ी गिरावट का असर जल्द ही भारतीय इंधन मार्केट पर दिख सकता है। यदि अगल 7 से 10 दिनों तक तेल की कीमतें मौजूदा स्तर पर बनी रहती हैं तो तेल कंपनियां पेट्रोल और डीजल की बिक्री में नो-प्रॉफिट, नो-लॉस की स्थिति में पहुंच सकती हैं यानी कंपनियों की लागत और कमाई बराबर हो जाएगी। इसके बाद पेट्रोल और डीजल की कीमतों में राहत मिलने की संभावना बढ़ जाएगी। मीडिया रिपोर्टों के अनुसार, वर्तमान में सरकारी तेल कंपनियां पहले से खरीदे गए महंगे कच्चे तेल के स्टॉक के कारण अंडर-रिकवरी का सामना कर रही हैं। चालू वित्त वर्ष की पहली तिमाही में कंपनियों को 75,000 करोड़ रुपए से अधिक का नुकसान हुआ है, जिससे उनकी वित्तीय स्थिति पर दबाव बना हुआ है।

स्टेल प्रमुख समाचार

इंग्लैंड और भारत के बीच तीसरे टी20 मैच आज

नईदिल्ली। ब्रिटेन दौरे पर अब तक जीत का स्वाद चखने में नाकाम रही भारतीय टीम मंगलवार को इंग्लैंड के खिलाफ तीसरे टी20 अंतरराष्ट्रीय मुकाबले में संयोजन में बदलाव कर सकती है। कप्तान श्रेयस अय्यर की अनुआई में टीम

प्रबंधन अतिरिक्त तेज गेंदबाज को अंतिम एकादश में शामिल करने पर विचार कर रहा है, जबकि लेग स्पिनर रवि बिश्नोई की जगह खतरे में दिखाई दे रही है। अय्यर की कप्तानी में भारत अब तक चार में से तीन मुकाबले हार चुका है। इनमें आयरलैंड के खिलाफ 0-2 की शरमांक श्रृंखला हार भी शामिल है। ऐसे में टीम के लिए तीसरा टी20 करो या मरो जैसा मुकाबला बन गया है। मैनचेस्टर में खेले गए दूसरे टी20 में बिश्नोई पूरी तरह लय से बाहर नजर आए।

उन्होंने तीन 'बैक-फुट नो-बॉल' फेंकी और पारी के 17वें ओवर में 29 रन लुटाए। चार ओवर में बिना विकेट लिए 60 रन खर्च करने के बाद उनकी टीम में जगह पर सवाल उठने लगे हैं। विशेषज्ञों का मानना है कि जब अक्षर पटेल और वरुण चक्रवर्ती पहले से मौजूद थे, तब ओल्ड ट्रैफर्ड की परिस्थितियों में तीसरे विशेषज्ञ स्पिनर की जरूरत नहीं थी। ट्वेंट ब्रिज की परिस्थितियों को देखते हुए बिश्नोई का अंतिम एकादश में शामिल होना मुश्किल माना जा रहा है। उनकी जगह तेज गेंदबाज प्रिंस यादव को मौका मिल सकता है।

स्विंग और पिच से अतिरिक्त हरकत हासिल करने की उनकी क्षमता उन्हें प्रसिद्ध कृष्णा से बेहतर विकल्प बनाती है, जिनकी 'बैक-ऑफ-द-लेंथ' गेंदें टी20 क्रिकेट में अपेक्षाकृत आसान साबित होती हैं। तेज गेंदबाज अश्वीदीप सिंह ने पिछले मैच में शुरुआती ओवर में दो विकेट समेत कुल तीन विकेट झटकते थे, लेकिन इंग्लैंड के कप्तान हैरी ब्रूक द्वारा उनके एक ओवर में बनाए गए 27 रन भी भारत की हार का बड़ा कारण बने।

आर्थिक/वाणिज्य/विज्ञान/

प्रमुख समाचार

किशन सनमुखदास भावनानी

वैश्विक स्तरपर भारत में प्याज केवल एक सब्जी नहीं,बल्कि अर्थव्यवस्था, राजनीति, कृषि और आम नागरिक की रसोई से जुड़ा अत्यंत संवेदनशील विषय है। देश में कई बार प्याज की कीमतों ने सरकारों की नीतियों को प्रभावित किया है और चुनावी राजनीति तक में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका रही है। इसलिए जब 4 जुलाई 2026 से केंद्र सरकार ने बफर स्टॉक के लिए प्याज की सरकारी खरीद कीमत में लगभग 13.3 प्रतिशत की वृद्धि करते हुए 1,875 रुपए प्रति क्विंटल से बढ़ाकर 2,125 रुपए प्रति क्विंटल करने का निर्णय लिया जो आज 4 जुलाई 2026 से लागू हो चुका है,तो इसे केवल मूल्य वृद्धि के रूप में नहीं बल्कि किसानों,उपभोक्ताओं और कृषि बाजार के बीच संतुलन स्थापित करने वाले एक महत्वपूर्ण आर्थिक निर्णय के रूप में देखा गया।

मैं यह मानता हूँ कि यह निर्णय स्पष्ट संकेत देता है कि सरकार उत्पादन बढ़ाने,किसानों को न्यूनतम लाभकारी मूल्य दिलाने तथाभविष्य में मूल्य स्थिरता सुनिश्चित करने की दिशा में सक्रिय कदम उठा रही है।भारत विश्व के सबसे बड़े प्याज उत्पादक देशों में शामिल है। महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, कर्नाटक, गुजरात और राजस्थान जैसे राज्य देश के अधिकांश प्याज उत्पादन में योगदान देते हैं। इनमें भी महाराष्ट्र का नासिक क्षेत्र एशिया के सबसे बड़े प्याज उत्पादन क्षेत्रों में गिना जाता है। विरंडना यह है कि भरपूर उत्पादन होने के बावजूद किसान कई बार लागत से भी कम कीमत पर प्याज बेचने को मजबूर हो जाते हैं। दूसरी ओर, जब उत्पादन कम होता है या आपूर्ति बाधित होती है, तो यही प्याज आम उपभोक्ता की पहुंच से बाहर हो जाता है इसलिए ही कई बार जुमला आता है कि प्याज ने आसू निकल कर रक्षा लिया,



यही असंतुलन वजह से भारतीय कृषि बाजार की सबसे बड़ी चुनौती है।

साथियों, सरकार द्वारा खरीद मूल्य को 250 रुपए प्रति क्विंटल बढ़ाने का सबसे बड़ा लाभ उन किसानों को मिलेगा जो अपनी उपज सरकारी बफर स्टॉक योजना के अंतर्गत बेचते हैं। यदि कोई किसान 500 क्विंटल प्याज बेचता है, तो उसे पहले की तुलना में लगभग 1.25 लाख रुपए अतिरिक्त आय प्राप्त होगी। छोटे और मध्यम किसानों के लिए यह अतिरिक्त आय खेती की लागत निकासने,आपली फसल की तैयारी करने तथा

वाहनों की खुदरा बिक्री जून में 21.83 प्रतिशत बढ़ा : फाडा

नई दिल्ली। देश में वाहनों की खुदरा बिक्री जून में सालाना आधार पर 21.83 प्रतिशत बढ़कर 25,57,234 इकाई हो गई। वाहन विक्रेता संघ फाडा ने सोमवार को यह जानकारी दी। देश में वाहनों की खुदरा बिक्री जून 2025 में 20,98,996 इकाई रही थी। फेडरेशन ऑफ ऑटोमोबाइल डीलर्स एसोसिएशंस (फाडा) ने बयान में कहा कि यात्री वाहनों (पीवी) की खुदरा बिक्री जून में 28.63 प्रतिशत बढ़कर 4,10,853 इकाई रही जो जून 2025 में 3,19,412 इकाई थी। दोपहिया वाहनों की बिक्री 21.22 प्रतिशत बढ़कर 18,28,458 इकाई हो गई जबकि एक साल पहले इसी महीने यह 15,08,378 इकाई थी। फाडा के अनुसार, जून में तिपहिया वाहनों की बिक्री 1,04,035 इकाई से सालाना आधार पर 16.2 प्रतिशत बढ़कर 1,20,889 इकाई रही। वाणिज्यिक वाहनों की बिक्री भी 16.88 प्रतिशत बढ़कर 90,972 इकाई हो गई।

ओबेरॉय रियल्टी ने 8,109 करोड़ रु. की लगजरी इकाइयां बेचीं

मुंबई। मुंबई स्थित ओबेरॉय रियल्टी लिमिटेड ने मजबूत मांग के दम पर गुरुग्राम में हाल ही में शुरू की गई अपनी पहली आवासीय परियोजना में 8,109 करोड़ रुपए की लगजरी इकाइयां बेची हैं। जून को दिल्ली-एनसीआर बाजार में प्रवेश की घोषणा के साथ गुरुग्राम के गोल्फ कोर्स एक्सटेंशन रोड स्थित अपनी आवासीय परियोजना के पहले चरण की शुरुआत की। इसमें छह टावर में कुल 832 आवासीय इकाइयां शामिल हैं। इस परियोजना में कुल 6,000 करोड़ रुपए का निवेश और 16,000 करोड़ रुपए की संभावित मूल्य का अनुमान है। 14.8 एकड़ की परियोजना में 13.52 लाख वर्ग फुट का रेरा कारपेट क्षेत्र (कुल 23.10 लाख वर्ग फुट बिक्री योग्य क्षेत्र) बेचा गया है।



इंतज़ार कर रहे हैं। छह सदस्यों वाली एक स्पेशल इन्वेस्टिगेशन टीम (एसआईटी) बनाई गई है। चार एफआईआर दर्ज की गई हैं, जिनमें लड़की के कथित रेप और मर्डर तथा एक व्यक्ति की पीट-पीटकर हत्या (लिंचिंग) से जुड़े मामले शामिल हैं। पुलिस ने बताया कि बाकी संदिग्धों को पकड़ने के लिए छापेमारी जारी है। बारहपु और उसके आस-पास के इलाकों में भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता की धारा 163 के तहत निषेधाज्ञा लागू की गई और तनाव के बीच अतिरिक्त पुलिस बल तैनात किया गया। शनिवार को लापता हुई 12 साल की बच्ची का शव एक दिन बाद तालाब से मिला। उसके परिवार ने आरोप लगाया कि उसके साथ बलात्कार और हत्या की गई। रविवार को स्थानीय लोगों ने न्याय की मांग करते हुए सड़कें और रेलवे ट्रैक जाम कर दिए। सुबुदु अधिकारी ने बच्ची के पिता को फोन किया और उन्हें भरोसा दिलाया कि दोषियों को गिरफ्तार कर सजा दी जाएगी। पिता ने कहा कि उन्होंने दोषियों को फांसी देने की मांग की। उन्होंने [अधिकारी] मुझसे मंगलवार को भवानी भवन [राज्य अपराधिक जांच विभाग का मुख्यालय] आने को कहा। मैं प्रशासन से संतुष्ट हूँ।

डॉ. मुखर्जी का जीवन राष्ट्रनिष्ठा, त्याग और संकल्प का प्रेरक उदाहरण : ओपी



रायपुर। देश की एकता, अखंडता और सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के प्रखर पुरोधा, प्रखर शिक्षाविद् डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी की 125वीं जयंती के अवसर पर शहीद नंदकुमार पटेल विश्वविद्यालय में व्याख्यान समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में प्रदेश के वित्त मंत्री ओपी चौधरी मुख्य अतिथि के रूप में शामिल हुए। उन्होंने भारत माता एवं डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित कर दीप प्रज्वलित किया तथा उनके राष्ट्रनिर्माण में योगदान को नमन किया। वित्त मंत्री चौधरी ने कहा कि डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी का संपूर्ण जीवन राष्ट्रभक्ति, त्याग, शिक्षा, सिद्धांतों के प्रति अटूट निष्ठा और अदम्य साहस का अनुपम उदाहरण है। उन्होंने व्यक्तिगत हितों से ऊपर राष्ट्रहित को सर्वोच्च स्थान दिया और भारतीय लोकतंत्र तथा राष्ट्रीय एकता को नई दिशा प्रदान की। उनका जीवन आज भी युवाओं के लिए प्रेरणा का अक्षय स्रोत है। इस अवसर पर उन्होंने नेताजी सुभाष चंद्र बोस के राष्ट्र के प्रति योगदान का भी स्मरण किया।

अनुशासन ही सफलता की कुंजी

युवाओं को संबोधित करते हुए वित्त मंत्री ओपी चौधरी ने कहा कि सफलता केवल प्रतिभा से नहीं, बल्कि स्पष्ट लक्ष्य, अनुशासन, निरंतर परिश्रम और सकारात्मक सोच से प्राप्त होती है। व्यक्ति जैसा सोचता है, वैसा ही बनता है। उन्होंने कहा कि किसी भी निर्णय से पहले उसके परिणामों पर विचार करना चाहिए तथा अपने निर्णयों की जिम्मेदारी स्वयं स्वीकार करनी चाहिए। असफलताओं के लिए दूसरों को दोष देने के बजाय आत्ममंथन और निरंतर सीखने की प्रवृत्ति अपनानी चाहिए। उन्होंने युवाओं से आधुनिकता के साथ अपनी संस्कृति, भाषा और परंपराओं पर गर्व करने का भी आह्वान किया।

पद्म विभूषण स्व. तीजन बाई को लोक कलाकार देंगे श्रद्धांजलि

रायपुर। पंडवानी की अग्रिम साधिका, पद्मविभूषण एवं डी.लिट. से सम्मानित डॉ. श्रीमती तीजन बाई को 8 जुलाई को श्रद्धांजलि अर्पित की जाएगी। संस्कृति विभाग द्वारा स्व. तीजन बाई को संगीतमय श्रद्धांजलि अर्पण का यह कार्यक्रम दोपहर 2 बजे महंत घासीदास संग्रहालय परिसर, स्थित मुक्ताकाशी मंच से आयोजित होगा। इस अवसर



पर मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय, संस्कृति मंत्री श्री राजेश अग्रवाल सहित मंत्रीगण, सांसद, विधायक एवं जनप्रतिनिधियों के साथ छत्तीसगढ़ के पद्मश्री एवं राज्य अलंकरण से सम्मानित कलाकार, साहित्यकार, संस्कृति कर्मी तथा बड़ी संख्या में कला प्रेमी उपस्थित रहेंगे। कार्यक्रम में छत्तीसगढ़ के प्रतिष्ठित लोक कलाकार अपनी-अपनी प्रस्तुतियों के माध्यम से उस महान विभूति को श्रद्धासुमन अर्पित करेंगे, जिन्होंने पंडवानी जैसी लोकवाचिक परंपरा को गांव के चौपाल से उठाकर विश्व के प्रतिष्ठित सांस्कृतिक मंचों तक पहुंचाया। गीत, संगीत, पंडवानी, लोकगायन और अन्य लोककलाओं की प्रस्तुतियों के माध्यम से उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व का स्मरण किया जाएगा। यह आयोजन केवल एक श्रद्धांजलि समारोह नहीं, बल्कि छत्तीसगढ़ की सांस्कृतिक चेतना के उस स्वर्णिम अध्याय को नमन है।

नकटी मामले में कांग्रेस के सभी आरोप निराधार

किसी गरीब के साथ अन्याय नहीं होगा : मंत्री कश्यप

रायपुर। वन एवं सहकारिता मंत्री केदार कश्यप ने भाजपा कार्यालय एकात्म परिसर में आयोजित प्रेस वार्ता में कहा कि नकटी ग्राम प्रकरण को लेकर कांग्रेस द्वारा राज्य सरकार पर लगाए जा रहे आरोप पूरी तरह निराधार, भ्रामक और राजनीतिक दुर्भावना से प्रेरित हैं। कांग्रेस जनता के बीच भ्रम फैलाकर सरकार की छवि खराब करने का सुनियोजित प्रयास कर रही है, जबकि इस पूरे मामले की वास्तविकता इससे बिल्कुल अलग है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस जनता को गुमराह कर राजनीतिक रोजटियां सेंकना चाहती है, लेकिन प्रदेश की जनता सच्चाई को अच्छी तरह जानती है।



मंत्री केदार कश्यप ने कहा कि जिस भूमि को लेकर आज कांग्रेस राजनीति कर रही है, उसके आबंटन की प्रक्रिया 1 सितंबर 2020 से तत्कालीन कांग्रेस सरकार के कार्यकाल में प्रारंभ हुई थी।

राजस्व अभिलेखों में स्पष्ट उल्लेख है कि यह भूमि हाउसिंग बोर्ड को आबंटित किए जाने के लिए प्रस्तावित थी। आबंटन के

लिए भूमि चिन्हित होने के बाद वहां लगातार अवैध कब्जे बढ़ते गए और लगभग 3 हेक्टेयर से बढ़कर 15 हेक्टेयर तक अतिक्रमण फैल गया। उन्होंने कहा कि जिला प्रशासन ने इस पूरे प्रकरण में लगातार विधिसम्मत कार्रवाई करने का प्रयास किया। प्रशासन और स्थानीय जनप्रतिनिधियों द्वारा कब्जाधारियों के पुनर्वास और व्यवस्थापन के

लिए कई बार सहमति बनाने का प्रयास किया गया। कार्रवाई के दौरान भी संवेदनशीलता बरती गई और प्रभावित परिवारों के व्यवस्थापन का प्रयास किया गया।

मंत्री केदार कश्यप ने कांग्रेस के इस आरोप को पूरी तरह असत्य बताया कि नकटी गांव को पूरी तरह उजाड़ दिया गया। उन्होंने स्पष्ट किया कि नकटी गांव के 17 वार्डों में से केवल एक वार्ड में, जहां सरकारी भूमि पर अवैध कब्जा था, वहीं कार्रवाई की गई। पूरे गांव को उजाड़ जाने का प्रचार कांग्रेस द्वारा जानबूझकर फैलाया जा रहा है ताकि लोगों में भ्रम और आक्रोश पैदा किया जा सके। कांग्रेस ने इस विधिसम्मत प्रशासनिक कार्रवाई को जन

राजधानी

स्वस्थ छत्तीसगढ़ करेगा विकसित छत्तीसगढ़ का निर्माण: मुख्यमंत्री

103 करोड़ रुपये से अधिक के स्वास्थ्य अधोसंरचना कार्यों का भूमिपूजन

रायपुर। मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय ने आज अटल बिहारी वाजपेयी सभागृह, चिकित्सा महाविद्यालय रायपुर में 103 करोड़ रुपये से अधिक लागत के स्वास्थ्य अधोसंरचना विकास कार्यों का भूमिपूजन किया।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि स्वस्थ छत्तीसगढ़ ही विकसित छत्तीसगढ़ का निर्माण करेगा। प्रदेश में लगातार स्वास्थ्य सुविधाओं का विस्तार किया जा रहा है। यह परियोजनाएं प्रदेश में चिकित्सा शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं को नई ऊंचाई प्रदान करेंगी तथा मरीजों, विद्यार्थियों और चिकित्सकों सभी को इसका लाभ मिलेगा। इस अवसर पर छात्र-छात्राओं के लिए आधुनिक छात्रावास, कैंसर भवन के विस्तार तथा चिकित्सकों एवं

कर्मचारियों के आवासीय परिसर सहित विभिन्न निर्माण कार्यों की आधारशिला रखी गई। मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय ने कहा कि पिछली बार मेडिकल कॉलेज आने पर विद्यार्थियों ने छात्रावास निर्माण की मांग रखी थी, जिसे सरकार ने गंभीरता से लेते हुए आज उसके निर्माण की शुरुआत कर दी है। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार ने पिछले ढाई वर्षों में जनता से किए गए अधिकांश वादों को पूरा किया है और %मोदी की गारंटी% को धरातल पर उतारा है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत आज विश्व की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन चुका है और विकसित भारत के संकल्प की दिशा में तेजी से आगे बढ़ रहा है। मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य



सरकार स्वास्थ्य सुविधाओं के विस्तार को सर्वोच्च प्राथमिकता दे रही है। विकसित छत्तीसगढ़ के निर्माण के लिए स्वस्थ छत्तीसगढ़ आवश्यक है। स्वास्थ्य मंत्री श्री श्याम बिहारी जायसवाल के नेतृत्व में चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग लगातार उल्लेखनीय कार्य कर रहा है। उन्होंने विभाग के अधिकारियों एवं पूरी टीम को बधाई देते हुए कहा कि प्रदेश में चिकित्सा सुविधाओं का लगातार विस्तार किया जा रहा

है।मुख्यमंत्री श्री साय ने कहा कि केंद्र सरकार का छत्तीसगढ़ को निरंतर सहयोग मिल रहा है। उन्होंने बताया कि डीएम कार्डियक कोर्स की स्वीकृति से लेकर अन्य स्वास्थ्य परियोजनाओं तक केंद्र सरकार ने हर मांग पर सकारात्मक सहयोग दिया है। उन्होंने उम्मीद जताई कि भविष्य में छत्तीसगढ़ को अखिल भारतीय आयुर्वेद संस्थान (ऑल इंडिया इंस्टीट्यूट ऑफ आयुर्वेद) की भी सीगात मिलेगी, जिससे

राज्य की समृद्ध औषधीय वनस्पतियों एवं आयुर्वेद को नई पहचान मिलेगी। मुख्यमंत्री ने कहा कि बस्तर अब नक्सलवाद से मुक्त होकर तेजी से विकास के मार्ग पर आगे बढ़ रहा है। स्वास्थ्य विभाग ने दूरस्थ क्षेत्रों में घर-घर पहुंचकर लाखों लोगों का स्वास्थ्य परीक्षण एवं उपचार किया है। उन्होंने मेडिकल विद्यार्थियों से आह्वान किया कि वे अपनी पढ़ाई पूरी कर सरगुजा से लेकर बस्तर तक प्रदेश के

हर क्षेत्र में सेवाएं देने का संकल्प लें और केवल शहरों तक सीमित रहने की मानसिकता न रखें।

उन्होंने कहा कि सरकार चिकित्सा शिक्षा के लिए आवश्यक सभी सुविधाएं उपलब्ध कराने के लिए प्रतिबद्ध है तथा विद्यार्थियों को बेहतर अधोसंरचना, छात्रावास एवं आधुनिक शिक्षण वातावरण उपलब्ध कराया जाएगा।

उपमुख्यमंत्री श्री अरुण साव ने कहा कि लगभग 104 करोड़ रुपये की लागत से बनने वाले छात्रावास, कैंसर संस्थान विस्तार एवं अन्य अधोसंरचना परियोजनाएं चिकित्सा क्षेत्र में ऐतिहासिक उपलब्धि साबित होंगी। उन्होंने कहा कि प्रदेश में गुणवत्तापूर्ण चिकित्सा शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं के विस्तार के लिए सरकार निरंतर कार्य कर रही है।

डीएपी और यूरिया की किल्लत से बोनी पिछड़ रही है : बैज

रायपुर। खाद की पर्याप्त उपलब्धता के सरकारी दावों को किसानों के साथ भद्दा मजाक बताते हुए प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष दीपक बैज ने कहा है कि पूरे प्रदेश में खाद की कमी के कारण बोनी और थरहा का काम प्रभावित हो रहा है, किसानी पिछड़ रही है लेकिन सत्ता में बैठे जिम्मेदार केवल फर्जी दावें करके अपनी जिम्मेदारियों से दूर भाग रहे हैं। मात्र 24 हजार टन डीएपी के कागजी आबंटन से अपनी उपलब्धि बता कर श्रेय लेने वाले भाजपा नेताओं को यह बताना चाहिए खुद के ही द्वारा तय लक्ष्य 15 लाख 55 हजार मीट्रिक टन में से केवल 7 लाख 27 हजार 833 मीट्रिक टन खाद ही किसानों को दिया गया है जो कि मांग के आधे से भी कम है। सबसे कम वितरण डीएपी और यूरिया का है जो किसानों के मांग की तुलना में चौथाई भी नहीं है। कभी किस्तों में



खाद तो कभी टोकन पर देने के तुगलकी परमान जारी किए, पिछले साल की तुलना में डीएपी में 40 प्रतिशत कटौती और यूरिया 20 प्रतिशत कम देने का आदेश? फिर और थरहा का काम प्रभावित हो रहा है, किसानी पिछड़ रही है लेकिन सत्ता में बैठे जिम्मेदार केवल फर्जी दावें करके अपनी जिम्मेदारियों से दूर भाग रहे हैं। मात्र 24 हजार टन डीएपी के कागजी आबंटन से अपनी उपलब्धि बता कर श्रेय लेने वाले भाजपा नेताओं को यह बताना चाहिए खुद के ही द्वारा तय लक्ष्य 15 लाख 55 हजार मीट्रिक टन में से केवल 7 लाख 27 हजार 833 मीट्रिक टन खाद ही किसानों को दिया गया है जो कि मांग के आधे से भी कम है। सबसे कम वितरण डीएपी और यूरिया का है जो किसानों के मांग की तुलना में चौथाई भी नहीं है। कभी किस्तों में



एम्स रायपुर में राष्ट्रीय क्रैनियोवर्टिब्रल जंक्शन सर्जरी कार्यशाला संपन्न



रायपुर। अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान रायपुर के न्यूरोसर्जरी विभाग द्वारा न्यूरोलॉजिकल सोसाइटी ऑफ इंडिया के तत्वावधान में राष्ट्रीय स्तर की क्रैनियोवर्टिब्रल जंक्शन सर्जरी कार्यशाला का सफल आयोजन किया गया। यह उच्च स्तरीय शैक्षणिक एवं प्रशिक्षण कार्यशाला संस्थान के एनाटॉमी विभाग की अत्याधुनिक कैडेवरिक लैब में संपन्न हुई, जिसमें देशभर से वरिष्ठ न्यूरोसर्जन, विशेषज्ञ चिकित्सक, रेजिडेंट डॉक्टर एवं अन्य प्रतिभागियों ने सक्रिय भागीदारी की। क्रैनियोवर्टिब्रल जंक्शन मानव शरीर का वह अत्यंत संवेदनशील एवं महत्वपूर्ण क्षेत्र है, जहां मस्तिष्क रीढ़ की हड्डी के ऊपरी भाग से जुड़ता है। इस क्षेत्र में श्वसन, शरीर संतुलन, गति एवं अन्य महत्वपूर्ण न्यूरोलॉजिकल क्रियाओं को नियंत्रित करने वाली संरचनाएं स्थित होती हैं। यहां उत्पन्न होने वाली जटिलताएं गंभीर दर्द, अंगों में कमजोरी, चलने-फिरने में कठिनाई, निगलने में समस्या तथा कई बार जीवन के लिए जोखिमपूर्ण न्यूरोलॉजिकल स्थितियों का कारण बन सकती हैं।

सहकारिता बनेगी किसानों की समृद्धि का नया आधार : शर्मा

रायपुर। भारत सरकार के सहकारिता मंत्रालय की स्थापना के पाँच वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में 29 जून से 6 जुलाई 2026 तक आयोजित सहकारिता सप्ताह का समापन कबीरधाम जिले के पीजी कॉलेज डोम, कवर्धा में जिला स्तरीय कृषक संगोष्ठी के साथ हुआ। प्रदेश के उप मुख्यमंत्री विजय शर्मा मुख्य अतिथि के रूप में शामिल हुए। कार्यक्रम में राजनांदगांव लोकसभा क्षेत्र के सांसद



संतोष पाण्डेय, पंडरिया विधायक श्रीमती भावना बोहरा भी उपस्थित रहें। संगोष्ठी के माध्यम से किसानों को सहकारिता आंदोलन को और अधिक सशक्त बनाने, आधुनिक कृषि तकनीकों को अपनाने तथा सहकारी संस्थाओं के माध्यम से आर्थिक समृद्धि की दिशा में आगे बढ़ने का संदेश दिया गया। उन्होंने कहा कि आज हमें सहकारिता को नई दिशा देने का संकल्प लेना होगा और इसे केवल पारंपरिक गतिविधियों तक सीमित न रखकर बहुआयामी विकास का मजबूत माध्यम बनाना होगा। उन्होंने कहा कि सहकारिता का वास्तविक अर्थ है, सभी लोगों का एकजुट होकर साझा उद्देश्य के लिए कार्य करना। आज सहकारिता के माध्यम से धान उपार्जन और बैंकिंग जैसी व्यवस्थाएं सफलतापूर्वक संचालित हो रही हैं, लेकिन अब समय आ गया है।

ई-ऑफिस के प्रभावी संचालन हेतु शुरू हुआ प्रशिक्षण

रायपुर। डिजिटल इंडिया कार्यक्रम के अंतर्गत छत्तीसगढ़ स्टेट पॉवर कंपनी में ई-ऑफिस प्रणाली का सफलतापूर्वक क्रियान्वयन किया जा चुका है। ई-ऑफिस के माध्यम से कार्यालयीन कार्यों का अधिक प्रभावी, पारदर्शी एवं समयबद्ध संचालन सुनिश्चित करने के उद्देश्य से पॉवर कंपनी के कार्यपालक निदेशक (ऊर्जा सूचना प्रौद्योगिकी केन्द्र) कार्यालय द्वारा अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए पुनः प्रशिक्षण कार्यक्रम आज से प्रारंभ किया गया। अप्रैल 2026 से पॉवर कंपनीज के सभी कार्यालयों में ई आफिस की औपचारिक शुरुआत हुई।इसी के तहत अब 2 जुलाई से 30 जुलाई कुल एक माह के लिए प्रशिक्षण आयोजित किया गया है। कार्यक्रम के तहत प्रथम पाली में प्रारंभिक प्रशिक्षण एवं द्वितीय पाली में जागरूकता एवं मध्यवर्ती स्तर का प्रशिक्षण दिया जाएगा। आज प्रथम दिवस में कुल 500 से अधिक अधिकारी-कर्मचारी ने आन लाइन के माध्यम से प्रशिक्षण प्राप्त किये। प्रशिक्षण कार्यक्रम के अंतर्गत पॉवर कंपनीयों के मुख्यालय एवं क्षेत्रीय कार्यालयों में कार्यरत समस्त अधिकारी-कर्मचारी तथा आवक-जावक शाखा के कर्मचारियों को ई-ऑफिस के विभिन्न मॉड्यूल एवं कार्यप्रणाली की जानकारी प्रदान की जाएगी। प्रशिक्षण में ई-फाइल निर्माण एवं संचालन, पत्राचार का डिजिटल निष्पादन, दस्तावेजों का ऑनलाइन प्रबंधन, फाइल ट्रैकिंग तथा अन्य महत्वपूर्ण सुविधाओं के व्यावहारिक उपयोग का प्रशिक्षण दिया जाएगा।

डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी का जयन्ती पर श्रद्धांजलि कार्यक्रम



रायपुर। नगर निगम रायपुर के संस्कृति विभाग द्वारा आज 6 जुलाई को डा श्यामा प्रसाद मुखर्जी का जयन्ती पर शाददा चौक के किनारे स्थित उनकी प्रतिमा स्थल पर पुष्पांजलि कार्यक्रम का आयोजन किया गया।नगर निगम सभापति सूर्यकान्त राठौड़ ने डा श्यामा प्रसाद मुखर्जी की आदमकद प्रतिमा पर माल्यार्पण किया । पुष्पांजलि कार्यक्रम में विधायक सुनील सोनी, नगर निगम सभापति सूर्यकान्त राठौड़, नगर निगम संस्कृति विभाग के अध्यक्ष अमर गिदवानी, नगर निगम रायपुर के पूर्व पार्षद जयन्ती भाई पटेल सहित गणमान्यजनों, सामाजिक कार्यकर्ताओं, नवयुवकों, आमजनों, नगर निगम अधिकारियों, कर्मचारियों ने पूर्व डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी का जयन्ती पर सादर नमन किया।

बारिश में करंट से होने वाली दुर्घटनाओं से बचने विद्युत कंपनी ने जारी की एडवाइजरी

रायपुर। बारिश का मौसम शुरू होते ही विद्युत करंट से होने वाली दुर्घटनाओं की आशंका बढ़ जाती है। बिजली के खंभों, एचटी लाइनों, टूटें तारों तथा विद्युत उपकरणों के संपर्क में आने से हर वर्ष कई हादसे होते हैं, जिनमें कई बार लोगों का जान तक चली जाती है। इन दुर्घटनाओं से बचाव के लिए छत्तीसगढ़ स्टेट पावर डिस्ट्रीब्यूशन कंपनी लिमिटेड ने आम नागरिकों के लिए सुरक्षा संबंधी एडवाइजरी जारी करते हुए विशेष सावधानी बरतने की अपील की है।

कंपनी ने कहा है कि थोड़ी-सी लापरवाही भी गंभीर दुर्घटना का कारण बन सकती है। इसलिए विद्युत लाइनों, ट्रांसफार्मरों एवं अन्य विद्युत उपकरणों से सुरक्षित दूरी बनाए रखें तथा किसी भी प्रकार की छेड़छाड़ न करें। यदि आंधी-तूफान या बारिश के



दौरान बिजली के खंभे, तार अथवा अन्य उपकरण क्षतिग्रस्त दिखाई दें, तो इसकी सूचना तत्काल कंपनी के टोल-फ्री नंबर 1912, मोर बिजली ऐप अथवा निकटतम वितरण केंद्र या जोन कार्यालय में दें। बारिश के दौरान बिजली के खंभों, तारों और ट्रांसफार्मरों से दूर रहें। जहां विद्युत तार या उपकरण मौजूद हों, वहां जान तक चली जाती है। इन दुर्घटनाओं से बचाव के लिए छत्तीसगढ़ स्टेट पावर डिस्ट्रीब्यूशन कंपनी लिमिटेड ने आम नागरिकों के लिए सुरक्षा संबंधी एडवाइजरी जारी करते हुए विशेष सावधानी बरतने की अपील की है।

कंपनी ने कहा है कि थोड़ी-सी लापरवाही भी गंभीर दुर्घटना का कारण बन सकती है। इसलिए विद्युत लाइनों, ट्रांसफार्मरों एवं अन्य विद्युत उपकरणों से सुरक्षित दूरी बनाए रखें तथा किसी भी प्रकार की छेड़छाड़ न करें। यदि आंधी-तूफान या बारिश के